

जैन स्तोत्र रत्नमाला.

(जेनी अंदर नवस्मरण उपरांत
बीजा व स्तोत्रो वे.)

उपावी प्रसिद्ध करनार
कोठारी कसलचंद नीमजी.



अमदावादमां
राजनगर प्रिन्टींग प्रेसमां ठापी.

वीर संवत १४३३ संवत १९६३

मूल्य चार आना.

अनुक्रमणिका.

विषय.	पृष्ठ.
१ नवकार.	५
२ नवसग्वहर.	५
३ संतिकर स्तोत्र.	७
४ तिजयपहुत्त स्तोत्र.	१०
५ नमिञ्जण स्तोत्र.	१४
६ श्रीअजितशांति स्तवन.	२०
७ ज्ञक्तामर स्तोत्र.	३६
८ कल्याणमंदिर स्तोत्र.	५१
९ बृहच्छांति स्तवन.	६७
१० जयतिहुअण स्तोत्र.	७५
११ जीनपंजर स्तोत्र.	८९

१२ ग्रहशांति स्तोत्र.	ए६
१३ मंत्राधिराज स्तोत्र.	एए
१४ ऋषिमंमल स्तोत्र.	१०६
१५ श्री तत्त्वार्थसूत्र स्तोत्र.	११७

जैनस्तोत्र संग्रह.

॥ अथ श्री नव स्मरणानि प्रारब्धते ॥

॥ तत्र प्रथम नवकार ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सि-
द्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उव-
ष्यायाणं, नमो लोए सबसाहूणं, ए-
सो पंच नमुक्कारो, सबपावप्पणा-
सणो ॥ मंगलाणं च सबेसिं, पढमं
हवइमंगलं ॥ इति प्रथम स्मरणं ॥१

॥ अथ उवसग्गहरं द्वितीय स्मरणं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदा-

(६)

मि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहर विस-
निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥
१ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ
जो सया मणुन ॥ तस्स गह रोग
मारी, डुठ जरा जंति उवसासं ॥ २
॥ चिठ्ठन दूरे मंतो, तुळ्ळ पणामोवि
वहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसु वि
जीवा, पावंति न डुक्कदोगच्चं (दो-
हगं) ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लळे,
चिंतामणि कप्पपायवप्प्रहिए ॥ पा-
वंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं
ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुन म हायस,
जत्तिप्रर निप्परेणं हिअएण ॥ ता दे-

(७)

व दिङ्ग बोहिं, जवे जवे पास जि-
एचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ संतिकरस्तोत्रम् तृतीयं स्मरणं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगस-
रणं जयसिरीइ दायारं ॥ समरामि
जत्त पालग, निवाणी गरुड कय से-
वं ॥ १ ॥ नुँ सनमो विप्पोसहि,
पत्ताणं संति सामि पायाणं ॥ झो
स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवडुरिअ हर-
णाणं ॥ २ ॥ नुँ संति नमुक्कारो, खे
लोसहिमाइलद्धिपत्ताणं ॥ सौँ झी
नमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं

(८)

॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणि सि
रि देवी जस्कराय गणि पिन्ना ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रस्कं
तु जिणज्जत्ते ॥ ४ ॥ रस्कंतु मम शे
हिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखलाय सया
॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता का-
लि महाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गं
धारी, महजाला माणवी अ वइरुद्धा
॥ अहुत्ता माणसिया, महामाणसि
या उ देवीउ ॥ ६ ॥ जस्का गोमुह
महजस्क, तिमुह जस्केस तुंवहं कु-
सुमो ॥ मायंगो विजयाजिय, वंजो
मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ उम्मुह

(ए)

पयाल किन्नर, गरुडो गंधर्व तद्वय
जस्किंदो ॥ कूबेर वरुणो जिननी,
गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥ देवीन
चक्रेसरि, अजिया डुरिआरि कालि
महाकाली ॥ अच्युअ संता जाला,
सुतारया सोय सिरिवच्चा ॥ ए ॥ चं
ना विजयंकुसि प, नइति निवाणि
अच्युआ धरणी ॥ वइरुट्ट बुत गंधा-
रि, अंब पनमावई सिद्धा ॥ १० ॥
इअ तिह रक्कणरया, अन्नेवि सुरा
सुरी चक्कहावि ॥ वंतर जोइणि प-
मुहा, कुणंतु रक्कं सया अम्हं ॥ ११
॥ एवं सुदिठि सुरगण, सहित संघ-

(१०)

स्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि करेण
रक्कं, मुणिसुंदरसूरि शुअमहिमा ॥
१२ ॥ इअ संति नाह सम्म, द्विठि
रक्कं सरइ तिकालं जो ॥ सबोवदव
रहिण, स लइइसुह संपयं परमं ॥
१३ ॥ तवगह्व गयण दिणयर, जुग
वर सिरि सोमसुंदर गुरूणं ॥ सुप-
साय लइ गणहर, विअ सिद्धिं ज्ञ-
णइ सीसो ॥ १४ ॥

इति श्री तृतीय स्मरणं ॥ ३ ॥



॥ अथ तिजयपट्ट चतुर्थ स्मरणं ॥

॥ तिजय पट्ट पयासय, अठ

महापाद्मिहेर जुत्ताणं ॥ समय स्कि-
 त्त विआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं
 ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पन-
 रस पन्नास जिणवर समूहो ॥ ना-
 सेन सयल डुरिअं, नविआणं न-
 त्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला
 विय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥
 गह नूअ रक्क साइणि, घोरुवसग्गं
 पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसा
 विय, सठ्ठी पंचेव जिणगणो एसो ॥
 वाहि जल जलण हरि करि, चोरा-
 रि महा नयं हरनु ॥ ४ ॥ पणपन्ना
 य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चा

(१९)

लीसा ॥ रत्नं तु मे सरीरं देवा सुर
पणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहुः
सरसुंसः, हरहुंहुः तद्देव सरसुं
सः ॥ आलिङ्गियनाम गङ्गा, चक्रं
किरसवत्तु नदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी
पन्नती, वज्रसिंखला तद्देव वज्रं कु
सिया ॥ चक्रेश्वरि नरदत्ता, कालि
महाकालि तद्देव गोरी ॥ ७ ॥ गंधारी
महाजाला, माणवि वदरुद्ध तद्देव
अच्युता ॥ माणसि महामाणसिया,
विद्यादेवी तु रत्नं तु ॥ ८ ॥ पंचदस
कर्मभूमिस्तु, नृपपन्नं सत्तरिं जिणा
णसयं ॥ विविद्ध रयणाश्च वन्नो, वसो

(१३)

हिअं हरउ डुरिआइं ॥९॥ चउतीस
अइसय जुआ, अठमहापानिहेर कय
सोहा ॥ तिहयरा गयमोहा, जाए
अवा पयत्तेणं ॥ १० ॥ नुँ वर कणय
संख विहुम, मरगय घण सन्निहं
विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं,
सवामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥११॥
नुँ नवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी
विमाणवासी अ ॥ जे केवि डुठ
देवा, ते सव्वे नवसमंतु मम ॥ स्वा
हा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं, फलए
लिहिऊण खालिअंपीअं । एगंतराइ
गह नूअ साइणि मुग्गं पणासेई ॥

१३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मं
तं डुवारि पम्पिलिहिअं ॥ डुरिआरि
विजयवंतं, निप्रंतं निच्च मच्चेह ॥ १४ ॥



॥ अथ नमिऊण पंचमं स्मरणं ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, खू
मामणि किरण रंजिअं मुणिलो ॥
चलणजुअलं महाजय, पणासनं
संश्रवं बुद्धं ॥ १ ॥ सन्धिय कर चरण
नह मुह, निबुडु नासा विवन्न लाय-
ना ॥ कुठमहा रोगानल, फुल्लिंग
निद्ध सधंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा
राहण, सलिलंजलि सेय बुद्धिय छा

या ॥ (उन्नाहा) वण दवदह्वा गिरि
 पा, यव द्व पत्तापुणो लह्नी ॥ ३ ॥
 ड्वाय खुन्निय जल निहि, उप्पम
 कल्लोल नीसणारावे ॥ संजंत जय
 विसंठुल, निच्चामय मुक्कवावारे ॥
 ४ ॥ अवि दलिअजाणवत्ता, खणेण
 पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पासजिण च
 लण जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति
 नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुअवणदव,
 जाला वलिमिलियसयलदुमगहणे ॥
 रुअंत मुद्धमयवहु, नीसणारव नी
 सणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो क
 मजुअलं, निच्चाविअ सयल तिहु अ-

णाजोअं ॥ जे संजरंति मणुआ, न
 कुणइ जलणो जयं तसिं ॥ ७ ॥
 विलसंत जोग जीसण, फुरिआ
 रुण नयण तरल जीहालं ॥ उगग
 जुअंग नवजल, य सच्चहं जीसणा
 यारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कोम सरिसं,
 दूर परिच्छुद्धविसम विसवेगा ॥ तुह
 नामस्कर फुमसि, ऋमंतगुरुआ न-
 रालोए ॥ ९ ॥ अमवोसु निह्न त
 कर, पुलिंद सदूल सदजीमासु ॥
 जयविहुर बुन्न कायर, उद्धरिअ
 पहिअ सत्तासु ॥ १० ॥ अविलुत्त
 विहवसारा, तुह नाह पणाम मत्त

(१७)

वावारी ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता
हिय इत्थियं ठाणं ॥ ११ ॥ पङ्कलि
आनल नयणं, डुर वियारिय मुहं
महाकायं ॥ नहकुलिसघाय विअ
लिअ, गइंद कुंजळलान्णोयं ॥ १२ ॥
पणयससंजमपत्तिव, नहमणि मा
णिक पन्निअ पन्निमस्स ॥ तुह वय
णपहरणधरा, सीहं कुइंप्पि न गणं-
ति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंत सुसजं,
दीहकरुद्धाल वह्नि उच्चाहं ॥ महु
पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवज
लहरारावं ॥ १४ ॥ ज्जीमं महाग-
इंदं, अच्चासन्नंप्पि ते न विगणंति

जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ
 तुंगं समह्वीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि
 तिरुक् खग्गा, जिग्घाय पविइ उडुय
 कबंधे ॥ कुंतविणि जिन्न करि कल
 ह, मुक्क सिक्कार पनुरंमि ॥ १६ ॥
 निज्जियदप्पुळररिनु, नरिंद निवहा-
 ज्जमा जसं धवलं ॥ पावंति पावप-
 समिण, पास जिण तुह प्पच्चा वेण
 ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
 चोरारि मइंद गय रण जयाई ॥
 पासजिण नाम संकि तणेण पसमं
 ति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा जय-
 हरं, पास जिणिंदस्स संश्रवमुआरं

(१९)

॥ जविय जणाणंदयरं, कद्धाण परं
पर निहाणं ॥ १९ ॥ राय जय जस्क
रस्कस, कुसुमिण दुस्तुण रिस्क
पीसासु ॥ संजासु दी सुपंथे, नव-
सग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो
पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो
य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमे
उ, सयल जुवण च्चिअ चलणो ॥
॥ २१ ॥ नवसग्गंते कमठा, सुरम्मि
जाणानु जो न संचलिन ॥ सुर नर
किन्नरजुवइहिं, संथुन जयनपास-
जिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मप्पयारे,
अठारस अस्करेहिं जो मंतो ॥ जो

जाणइ सो जायइ, परम पयतं फुल
 पासं ॥ १३ ॥ पासह समरण जो
 कुणइ, संतुठे हिअएण ॥ अठुत्तर
 सय बाहि जय, नासइ तरस दूरेण
 ॥ १४ ॥ इति श्री महाजयहरना-
 मकं पंचमं स्मरणं ॥ ५ ॥



॥ अथ श्रीअजितशांति स्तवम् पष्ठमस्मरणं ॥

॥ अजिअं जिअ सब जयं, संतिं
 च पसंत सब गय पावं ॥ जय गुरु
 संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणि
 वयामि ॥ १ ॥ गाढा ॥ ववगय
 मंगुल जावे, तेहं विउल तव निम्म

(११)

ल सहावे ॥ निरुवम महप्पजावे,
ओसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥
गाहा ॥ सब दुक्क प्पसंतीणं, सब
पाव प्पसंतीणं ॥ सया अजिय सं
तीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥
सिलोगो ॥ अजिअ जिण सुहप्पव
त्तणं, तव पुरिसुत्तम नाम कित्ठणं,
॥ तद्द य धिइ मइ प्पवत्तणं तवय
जिणुत्तम संतिकित्ठणं ॥ ४ ॥ माग
हिया ॥ किरिआ विहि संचिअ क-
म्म किलेस विमुक्कयरं, अजिअं नि
चिअं च गुणेहिं महा मुणि सिद्धि
गयं ॥ अजिअस्स य संत्ति महासु-

(११)

णिणोवि अ संतिकरं, सययं मम
निवुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥
आलिङ्गणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्क
वारणं, जइ अविमग्गह सुक्क कार
णं ॥ अजिअं संतिंच जावुनु, अज्ज-
अकरे सरणं पवज्जाहा ॥ ६ ॥ माग
हिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहि-
अ, मुवरय जर मरणं ॥ सुर अ-
मुर गरुत्त जुअग वइ, पयय पणि
वइअं ॥ अजिअ महमविअ, सु
नय नय निनुण मज्जयकरं, स
ण मुवसरिअ जुवि दिविज,
महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ सगं-

ययं ॥ तं च जिणुतम मुत्तम नित्तम
 सत्तधरं, अज्झव मद्दवखंति विमुत्ति
 समाहि निहिं ॥ संतिकरं पणमामि
 दमुत्तम तिब्बयरं, संति मुणी मम
 संति समाहिवरं दिसन्तु ॥७॥ सोवा
 णयं ॥ सावन्ति पुव पत्तिवं च वर
 हन्ति मन्त्रय पसन्त विन्निन्न संथियं ॥
 धिर स्रस्ति वन्तं मयगल लीलाय
 माण वर गंधहन्ति पत्ताण पत्तियं सं
 थ वारिहं ॥ हन्ति हन्त बाहु धंत क
 णग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर
 लक्खणो वचिय सोम चारुरूवं सुइ
 सुइ मणाजिराम परम रमणिच्च

વર દેવ હુંહિ નિનાય મહુરયર
 સુહગિરં ॥ એ ॥ વેદનું ॥ અજિઅં જિ
 આરિગણં, જિઅ સવ જયં જવો
 હરિનું ॥ પણમામિ અહં પયનું, પાવં
 પસમેનું મે જયવં ॥ ૧૦ ॥ રાસાલુ-
 ઢનું ॥ યુગ્મં ॥ કુરુ જણ વય હઠિ-
 ણાનર, નરીસરો પઢમં તનું મહા
 ચક્કવટ્ટિ જોએ મહપ્પજાવો ॥ જો
 વાવત્તરિ પુરવર સહસ્સ વર નગર
 નિગમ જણવય વડ, વત્તીસા રાય
 વર સહસાણુયાય મગ્ગો ॥ ચનુદસ
 વર રયણ નવ મહાનિહિ ચનુસઠિ
 સહસ્સ પવર જુવર્ણણ સુંદરવડ,

(१५)

चुलसी हय गय रहसय सहस्स सी
मी, ठसवइ गाम कोमि सामी आ
सिज्जो जारहम्मि जयवं ॥ ११ ॥ वे
ह्नु ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सब
जया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं
वेहेन मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ यु-
ग्मं ॥ इक्काग विदेह नरीसर, नर व'
सहा मुणि वसहा ॥ 'नव सारय स
सि सकलाणण विगय तम विहुअ'
रया ॥ अजि उत्तम तेअ गुणेहिं, म
हा मुणि अमिअ बला विउल कुला
॥ पणमामि ते जव जय मूरण,
जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥

(१६)

चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूर
वंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव
धंत रूप्य पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल
॥ दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति
जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअ वंद
धेअ सब लोअ जाविअ पपजावणेअ
पइस जे समाहिं ॥ १४ ॥ ना
रायण ॥ विमल सत्ति कलाइ रे अ
मोमं, वितिमर सूर कराइरेअ तेअं ॥
तिअसवइ गणाइरेअ रूवं, धरणिधर
पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुम
लया ॥ सत्तेअ सया अजिअं, सा
मी रे अ वले अजिअं ॥ तव संजमे

(२७)

अ अजिअं, एस शुणामि जिणे
अजिअं ॥ १६ ॥ जुअगपरिरंगिअं ॥
सोम गुणेंहिं पावइ न तं, नव सरय
ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ न तं, नव
सरय रवि ॥ रूवगुणेहिं पावइ न
तं, तिअसगणवइ ॥ सारगुणेहिं
पावइ न तं, धरणिधरवइ ॥ १७ ॥
खिज्जिअय ॥ तिहवर पवत्तयं तम
रय रहियं धीर जण शुअ च्चिअं
चूअ कलि कलुसं ॥ संति सुह प्पव-
त्तयं तिगरण पयन्तं संति महं महा-
मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥
द्वलिअयं ॥ विणनणय सिरि रइ

अञ्जलि रसिगण संश्रुअं श्रिमिश्रं ॥
 विबुद्धाहिव धणवइ नरवइ श्रुय म
 द्विअच्चिअं बहुसो ॥ अइरुगय सरय
 दिवायर समहिअ सप्पन्नं तवसा ॥
 गयणंगण वियरण समुइअ चारण
 वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय-
 माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं,
 किन्नरोरगणमंसिअं ॥ देवकोप्ति
 सय संश्रुअं समणसंघ परिवंदिअं
 ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अन्नयं अणहं
 अरयं अरुयं अजियं अजिअं पयत्त
 पणमे ॥ २१ ॥ विङ्गुविलसियं ॥
 आगया वरविमाण, दिव्व कणग रद्द

(२९)

तुरय पहकर सएहिं हुलियं ॥ ससं
जमो अरण, खुज्जिअ लुलिअचल
कुंमलं गय तिरोम सोहंत मनलि
माला ॥ २२ ॥ वेढ्ढन ॥ जंसुरसंधा
सासुरसंधा, वेर विनुत्ता जत्ति सुजु
त्ता ॥ आयर जूसिय संजमपिंनिय,
सुहु सुविहिय सव वलोधा ॥ उत्तम
कंचण रयण परूविय, ज्ञासुर जस
ण ज्ञासुरिअंगा ॥ गाय समोणय
जत्ति वसागय, पंजलि पेसिय सी-
स पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥
वंदिनण ओनण तो जिणं तिगुण
मेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमि

जणय जिणं सुरासुरा, पमुइ आ
 सज्जवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खि-
 त्तयं ॥ तं महामुणि महंपि पंज-
 ली, राग दोस जय मोह वज्झियं
 ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं संति
 मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खि
 त्तयं ॥ अंवरंतर विआरणि आहिं,
 ललिय हंस बहु गामिणिआहिं ॥
 पीण सोणि अण सालिणिआहिं, स
 कल कमलदललोअणि आहिं ॥ २६
 ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणत्तर
 विणमिय गायलआहिं ॥ मणि कंच
 ण पसिद्धिअ मेहल सोदिय सोणि

तमाहिं ॥ वरखिंखिणि नेनुर स
 तिलय वलय विन्नूसणिआहिं ॥ २३
 कर चनुर मणोहर सुंदर दंसणि
 आहिं ॥ २४ ॥ चित्तरकरा ॥ देव
 सुंदरीहिं पाय वंदियाहिं वंदिया य
 जस्त ते सुविक्रमाकमा अप्पणो
 निमालएहिं मंणोमणपगारएहिं
 केहिं केहिं वि अवंग तिलय पत्तलेह
 नामएहिं चिद्धएहिं संगयं गयाहिं
 जति संनिविठं वंदणागयाहिं हुंति
 ते वंदिया पुणो पुणो ॥ २७ ॥ ना-
 रायन ॥ तमहं जिणचंदं अजिअं
 जिअ मोहं ॥ धुय सब किलेसं,

पयन्त पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं
 ॥ शुअ वंदिअयस्सारिसि गणदेव
 गणेहिं, तो देव बहुहिं पयन्त पण
 मिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण
 अस्सा, जत्ति वसागय पिंमिअ याहिं
 ॥ देव वररत्ता बहुआहिं, सुरवररत्त
 गुण पंमियआहिं ॥ ३० ॥ ज्ञासुर
 यं ॥ वंस सह तंतिताल मेलिए ति
 उक्कराजिराम सह मीसए कएअ,
 सुत्त समाणणे अ सुत्त सज्ज गीअ
 पायजाल घंठिआहिं ॥ बलय मेह
 ला कलाव नेत्तराजिराम सहमीसए
 कए अ देव नट्ठिआहिं हाव ज्ञाव

(३३)

विप्रम प्पगारएहिं ॥ नच्चिउण अंग
हारएहिं वंदिआय जस्स ते सुवि
क्कमा कमा तयं तिलोय सच्च सत्त
संति कारयं ॥ पसंत सब पाव दो
समेस हं नमामि संति सुत्तमं जि
एं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥ ठत्त चामर
पद्माग जूव जव मंनिआ'ऊय वर
मगर तुरय सिरिवच्च सुलंठणा ॥
दीव समुद्ध मंदर'दिसागय सोहिया
सच्चिअ वसह सीहरह चक्क वरंकि
या ॥ पाठांतर ॥ सिरिवच्च सुलंठ
णा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहाव
लठा सम प्पइठा, अदोस डुठा गु-

(३४)

ऐहिं जिठा ॥ पसायसिठाण तवे
पुठा, सिरिहिं ऽठा रिसीहिं जुठा
॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
धुय सव पावया, सवलोअहिय
मूत्र पावया, ॥ संश्रुया अजिअ
संति पावया, हुंतु मे सिव मुहाण
दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
एवं तव वल विजलं, शुअं मए
अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
वगय कम्मरयमलं, गइं गयं सा
सयं विजलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
बहु गुण प्व सायं, सुख सुहेण
परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे वि

(३५)

सायं कुणञ्च अ परिस्तावी अ प-
सायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएञ्च
अनंदिं, पावेञ्च अ नंदिनेण मज्झि
नंदिं ॥ परिस्तावि य सुह नंदिं,
समय दिखञ्च संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
गाहा ॥ परिकञ्च चानुम्मासे, सं-
वच्छरिए अवस्स जणिसव्वो ॥ सो
अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो
एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ
जोअ निसुणइ, उज्जञ्च कालंपि अ-
जिअ संति थयं ॥ नहु हुंति तस्स
रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥
गाहा ॥ जइ इच्छइ परम पयं, अ-

ऐहिं जिठा ॥ पसायसिठाण तवे
 पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा
 ॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
 धुय सब पावया, सबलोअदिय
 मूल पावया, ॥ संघुया अजिअ
 संति पावया, हुंतु मे सिव मुहाण
 दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
 एवं तव बल विनलं, शुअं मए
 अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
 वगय कम्मरयमलं, गइं गयं सा
 सयं विनलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
 बहु गुण प्य सायं, सुख सुहेण
 परमेण अविसायं ॥ नासेन मे वि

(३५)

सायं कुण्ठ अ परिस्तावी अ प-
सायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएण
अनंदिं, पावेण अ नंदिसेण मज्झि
नंदिं ॥ परिस्तावि य सुह नंदिं,
समय दिसुण संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
गाहा ॥ परिक्ख अ चानुम्मासे, सं-
वच्छरिए अवस्स जणिल्लवो ॥ सो
अवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो
एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ
जोअ निसुणइ, उज्जुण कालंपि अ-
जिअ संति अयं ॥ नहु हुंति तस्स
रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥
गाहा ॥ जइ इच्छइ परम पयं, अ-

ऐहिं जिठा ॥ पसायसिठाण तवे
 पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जुठा
 ॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण
 धुय सव पावया, सवल्लोअदिय
 मूल पावया, ॥ संश्रुया अजिअ
 संति पावया, हुंतु मे सिव सुहाण
 दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥
 एवं तव वल विजलं, शुअं मए
 अजिअ संति जिण जुअलं ॥ व-
 वगय कम्मरयमलं, गइं गयं सा
 सयं विजलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं
 बहु गुण प्प सायं, मुक्क सुहेण
 परमेण अविसायं ॥ नासेन मे वि

सायं कुण्ठ अ परिस्तावी अ प-
 सायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएण
 अनंदिं, पावेण अ नंदितेण मज्झि
 नंदिं ॥ परिस्तावि य सुह नंदिं,
 समय दिसुण संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥
 गाहा ॥ पक्खिअ चानुम्मासे, सं-
 वहरिए अवस्स जणिसवो ॥ सो
 अवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो
 एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ
 जोअ निसुणइ, उज्जुण कालंपि अ-
 जिअ संति अयं ॥ नहु हुंति तस्स
 रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥
 गाहा ॥ जइ इच्छइ परम पयं, अ-

हवा कितिं सुविठ्ठमं जुवणे ॥ ता
तेलुक्कुळरणे, जिणवयणे आयरं कु-
णह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥



॥ अथ नक्तामरनामकं सप्तम स्मरणं ॥

॥ नक्तामरप्रणतमौलिमणि प्र
ज्ञाणा, सुद्योतकं दलितपापतमो
वितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं नवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः
सकलबाहुमयतत्त्वबोधा उद्भूतबु
द्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तो-
त्रैर्द्वागत्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोत्र्ये

(३७)

किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्र ॥
१ ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-
पादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्वि-
गतत्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जल
संस्थितमिन्दुर्विंब, मन्यः क इच्छति
जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तुं
गुणान् गुणसमुद् शशांककांतान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या
॥ कल्पान्तकालपवनोद्धत नक्रचक्रं,
कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजा
प्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव
भक्तिवशात्सुनीश, कर्तुं स्तवं विगत
शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यम्

विचार्य मृगो मृगैः, नाज्येति किं
 निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥ ५ ॥
 अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
 त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्मां
 ॥ यत्कोकिलः किल मधो मधुरं वि
 रौति, तच्चारुनूतकलिकानिकैरेकहेतुः
 ॥ ६ ॥ त्वत्सं स्तवेन जवसंतति
 सन्निवद्धं, पापं कृणात्कृयमुपैति
 शरीरज्ञाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलि
 नीलमण्डोपमाशु, सूर्यांशुजिन्नमिव
 जार्धिरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
 नाग्र तव मंस्तवनं मयेदं, मारज्यते
 तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥ चेतो

॥३॥

हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु, मुक्ता
फलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्तु समस्तदोषं,
त्वत्संकथापि, जगतां दुरितानि हन्ति
॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशजांजि
॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं ज्वनज्ज्वणज्ज्वत!
नाथ, ज्ज्वतैर्गुणैर्ज्ज्ववि ज्ज्वंतमज्जिष्ठुवं
तः ॥ तुल्यज्ज्वन्ति ज्ज्वतो ननु तेन
किं वा, ज्ज्वत्याश्रितं यश्च नात्मसमं
करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्ज्वंतमनिमे
षविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपया
तिजनस्य चक्षुः ॥ प्रीत्वा पयः शृ-

शिकारद्युतिङ्गधसिंधोः, क्षारं जलं
 जलनिधेरशितुं कश्चेत् ॥ ११ ॥ यैः
 शांतरागरुचिज्जिः परमाणुजिस्त्वं,
 निर्मापितस्त्रिज्जुवनैकललामञ्जुत ॥
 तावन्तएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
 यत्ते समानपरं नहि रूपमस्ति ॥
 १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
 निः शेषनिर्जितजगन्नितयोपमानम्
 ॥ विवं कलंकमलिनं क्व निशाकर-
 स्य, यद्भासरे ज्वति पांमुपल्लाश-
 कट्वम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुल शशां
 ककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रि ज्जुवनं
 तव लंघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजग-

(४१)

दीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति
संचरतोयथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं
किमत्र यदि ते त्रिदशांग नांजि,
नीतं मनागपि मनो न विकारमा-
गम् ॥ कल्पान्तकालमरुता चलित-
चलेन, किं मंदराद्विशिखरं चलितं
कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपव-
र्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्रयमिदं
प्रकटीकरोषि ॥ गम्योन जातु म-
रुता चलताचलानां, दीपोऽपरस्त्व-
मसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुग-
म्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगमङ्ग-

(४१)

गंति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञा
वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींश्च
लोके ॥ १३ ॥ नित्योदयं दक्षितमो-
हमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य
न वारिदानाम् ॥ विव्राजते तव सु-
खाब्जमनल्लपकांति, विद्योत्तयङ्गद
पूर्वशशांकविंवम् ॥ १४ ॥ किं श-
र्वरीषु शशिनाहि विवस्वता वा,
युष्मन्सुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाश्र
॥ निष्पन्नशालि वनशालिनि जीव
लोके, कार्यं कियङ्गलधरैर्जलचार
नद्वैः ॥ १५ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि वि-
ज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा दरि-

(४३)

हरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्म-
णिषु याति यश्चा महत्वं, नैवंतु
काचशकले किरणाकुलेपि ॥ १० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृ-
ष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
किं वीक्षितेन ज्वता जुवि येन
नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ जवां
तरेपि ॥ ११ ॥ स्त्रीणां शतानि शत
शो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं
त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वादि-
शो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मिं, प्रा-
च्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्
॥ १२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं

पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः
 परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य
 जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपद-
 ह्य मुनींश्च पञ्चाः ॥२३॥ त्वामव्ययं
 विष्णुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमी-
 श्वरं मनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूप-
 ममलं प्रवदंति संतः ॥२४॥ बुद्धस्त्व-
 मेव विबुवाचिंतबुद्धिवोधात् ॥ त्वं शं-
 करोसि ज्ञानत्रयशंकरत्वात् ॥ धा-
 तासि धीर शिवमार्गं विधेर्विधानात्,
 व्यक्तं त्वमेव जगवन् पुरुषोत्तमोऽसि
 ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिह-

रायनाथ, तुभ्यं नमः कितितलामने
 लङ्गूषणाय ॥ तुभ्यं नमः स्त्रिजगतः
 परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिनज्जबोद
 धिशोपणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयो
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसं श्रि
 तो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषै-
 रुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नां
 तरेपि न कदाचिदपीकितोसि ॥ २७ ॥
 उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, मा
 ज्ञाति रूपममलं ज्वतोनितांतम् ॥
 स्पष्टोद्धतसत्किरणमस्ततमोवितानं,
 विंवं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥
 २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखा-

विचित्रे, विव्राजते तव वपुः कन-
 कावदातम् ॥ विवं वियद्विलसदंशु
 लतावितानं, तुंगोदपाद्गिरसीव
 सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदात
 चलचामरचारुशोभं, विव्राजते तव
 वपुः कलवौतकांतम् ॥ उद्यच्छां
 कशुचिनिर्जरवारिधार, मुञ्चैस्तटं सु-
 रगिरेरिव शातकौंजम् ॥ ३० ॥ उत्र
 त्रयं नव विज्ञाति शशांककांत, मु-
 चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रतापम्
 ॥ मुक्ताकलप्रकरजालविवृढ शोभं,
 प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वरत्वम् ॥
 ॥ ३१ ॥ उन्निन्दे मनवपंकजपुंजकां

ति, पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाजिरा
 मौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र
 धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिक-
 ष्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इहं यथा तव वि-
 नूतिरनूजिनेन्द्र, धर्मोपदेशनविधौ
 न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रज्ञा दिन-
 कृतः प्रहतांधकारा, तादृकुतो ग्रहग-
 णस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥ श्रयो-
 तन्मदाविलविलोलकपोलमूत्र, मत्तं
 भ्रमद् भ्रमर नादविवृद्धरूपम् ॥
 ऐरावतान्नमिन्नमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा
 ज्ञयं जवतिनो जवदाश्रितानाम् ॥
 ॥ ३४ ॥ जिनेन्द्रकुञ्जगतदुञ्चल

शोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरञ्जुषित
 ज्जूमिजागः ॥ वदक्रमः क्रमगतं ह
 रिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगा
 चलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कट्पांतका
 लपवनोद्धतवह्निकट्पं, दावानलं ज्व
 लितमुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् ॥ विश्वं
 जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्ना
 मकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६
 ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंवनीलं,
 क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम्
 ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक,
 मन्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥
 ३७ ॥ वत्गजुरंगगजगर्जित जीमनाद,

(४ए)

माजौ बलं बलवतामपि जूपतीनां ॥
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्व-
त्कीर्तनात्तमश्वाशु जिदामुपैति ॥३८
॥ कुंताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाह,
वेगावतारतरणातुरयोधजीमे ॥ युद्धे
जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पा
दपंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥३९॥
श्रंजोनिधौ कुजितजीषणनक्रचक्र,
पाठीनपीठजयदोल्बणवाम्बाधौ ॥
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्वा
सं विहाय जवतः स्मरणाद्ब्रजन्ति
॥ ४० ॥ उद्भूतजीषणजलोदर
ज्जारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्य

तजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजो
 मृतद्रिग्धदेहा, मर्त्या ज्ञवंति मकर
 ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठ
 मुरुशंखलवेषितान्गा, गाढं बृहन्निग
 रुकोटिनिष्ठृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रम
 निशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं
 विगतत्रयं जया ज्ञवंति ॥ ४२ ॥ मत्त
 ठिपेन्द्रमृगगज दवानलाहि, संग्राम
 वारिधिमहोदरबंधनोत्तम ॥ तस्या
 शु नाशमुपयाति जयं ज्ञेयव, य
 स्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥
 ॥ ४३ ॥ स्तोत्रम्रजं तव जिनेन्द्र गुणै
 निवृत्तं, जक्त्या मयारुचिरवर्णवि

चित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह
कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा
समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति ज्ञक्तामरनामकस्तोत्रं
सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥



॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्वोत्रं अष्टम
स्मरणं प्रारभ्यते ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यजे
दि, जीतान्नयप्रदमनिंदितमंघ्रिप
द्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेष
जंतु, पोतायमानमज्जिनम्य जिने
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगु

तजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजो
 मृतद्विधदेहा, मर्त्या ज्ञवंति मकर
 ध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठ
 मुरुशंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निग
 रुकोटिनिष्पृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रम
 निशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं
 विगतवन्दजया ज्ञवंति ॥ ४२ ॥ मत्त
 त्विपेन्द्रमृगराज दवानलाहि, संग्राम
 वाग्विमलोदरबंधनोत्तम ॥ तस्या
 शु नाशमुपयाति ज्ञयं ज्ञियेव, य
 स्तावकं स्तवस्मिं मतिमानर्थाते ॥
 ॥ ४३ ॥ स्तोत्रम्रजे तव जिनेन्द्र गुणै
 र्निबद्धां, ज्ञत्तया मयारुचिरवर्णवि

(५१)

चित्रपुष्पां ॥ घत्ते जनो य इदं
कंवगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा
समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति ज्ञक्तामरनामकस्तोत्रं
सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥



॥ अथ श्रीकल्याणमंदिरस्तोत्रं अष्टम
स्मरणं प्रारभ्यते ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमव्यजे
दि, जीताजयप्रदमनिंदितमंघ्रिप
द्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेष
जंतु, पोतायमानमज्जिनम्य जिने
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगु

(५१)

रुर्गिरिमांबुगशोः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्नयधूमकेतो, स्तस्याहमेव
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ १ ॥ युग्म
म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं
स्वरूप, मरुमादृशाः कथमधीश ज
वंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदि वा दिवांशो, रूपं प्ररूपयति
किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोदक
यादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गु-
णान्न गणयितुं न तव क्रमेत् ॥ क-
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
नर्मायेत केन जलधेर्ननु रत्नगशिः।

॥ ४ ॥ अज्युद्यतोस्मि तव नाथ ज
 माशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
 निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
 कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
 ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
 श, वक्तुं कथं जवति तेषु ममावका
 शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
 रितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु प
 क्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहि
 मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
 जवतो जवतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
 हत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

(५९)

रुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेव
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ १ ॥ युग्म
म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं
स्वरूप, मस्मादृशाः कश्चमधीश ज
वन्त्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति
किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक
यादनुजवन्नपि नाश्र मर्त्यो, नूनं गु-
णान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क-
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः

॥ ४ ॥ अन्युद्यतोस्मि तव नाथ ज
 माशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
 निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
 कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
 ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
 श, वक्तुं कथं ज्वति तेषु ममावका
 शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
 रितेयं, जलपंति वा निजगिरा ननु प
 क्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहि
 मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
 ज्वतो ज्वतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
 हत पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

(५९)

रुर्गरिमांबुराशोः, स्तोत्रं सुविस्तृत
मतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य
कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेव
किल संस्तवनं करिष्ये ॥ १ ॥ युग्म
म् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं
स्वरूप, मस्मादृशाः कश्चमधीश न
वन्त्यधीशः ॥ धृष्टोपि कौशिकशि
शुर्यदि वा दिवांघो, रूपं प्ररूपयति
किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक
यादनुन्नवन्नपि नाश्र मर्त्यो, नूनं गु-
णान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ क-
ल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा,
ह्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः

॥ ४ ॥ अच्युद्यतोस्मि तव नाथ ज
 माशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसं
 ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न
 निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां
 कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥
 ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवे
 श, वक्तुं कथं ज्वति तेषु ममावका
 शः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितका
 रितेयं, जल्यंति वा निजगिरा ननु प
 क्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहि
 मा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति
 ज्वतो ज्वतो जगंति ॥ तीव्रातपोप
 दत्त पांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म

सरसः सरलो निलोऽपि ॥ ३ ॥ हृद्
 त्तिनि त्वयि विज्ञो शिथिलीज्जवंति,
 जंतोः क्षणेन निविमा अपि कर्मवं
 धाः ॥ सद्योऽनुजंगममया इव मध्य
 ज्जाग, मज्ज्यागते वनशिखंमिनि चं
 दनस्य ॥ ४ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः
 सहसा जिनेऽ, रौडैरुपड्वशतैस्त्व
 यि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फु
 रिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु
 पशवः प्रपलायमानैः ॥ ५ ॥ त्वं ता
 रको जिनकथं जविनां त एव, त्वामु
 घ्रहंति हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा
 दतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गा

(५५)

तस्य मरुतः स किलानुज्ञावः ॥१०॥
यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रज्ञा
वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः कृपि
तः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः
पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि
दुर्धरवाम्बुवेन ॥ ११ ॥ स्वामिन्न
नटपगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां
जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥
जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन,
चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रज्ञा
वः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो
प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत
कंस किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्य

(५६)

मुत्र यदिवा शिशिरापि लोके, नील
द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी
॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा
परमात्मरूप, मन्वेप्रयंति हृदयांबु-
जकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्य
दि वा किमन्य, ददस्य संज्ञवि पदं
ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्याना
ज्जिनेश जवतो जविनः क्षणेन, देहं
विहाय परमात्मदशां व्रजंति ॥
तीव्रानलाहुपलज्जावमपास्य लोके,
त्वामीकरत्वमचिरादिव धातुज्जेदाः ॥
१५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्स वि
ज्ञाव्यसेत्वं, जव्यैः कथं तदपि नास्म

यसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ
 मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशम-
 यन्ति महानुजवाः ॥ १६ ॥ आत्मा
 मनीषिज्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो
 जिनेन्द्र ! जवतीह जवत्प्रजावः ॥
 पानीयमप्यमृतयत्यनुचिन्त्यमानं, किं
 नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥
 १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादि-
 नोपि, नूनं विज्ञो हरिहरादिधियाप्र-
 पन्नाः ॥ किं काचकामलिज्जिरीश-
 सितोऽपि शंखो, नो गृह्यते विविध-
 वर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश-
 समये संविधानुजवा, दास्तां

(५८)

जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युक्ते
दिनपतौ स महीरुहोपि, किंवा वि-
बोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९
॥ चित्रं विज्ञो कथमवाङ्मुखवृत्त-
मेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्प-
वृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदि
वा मुनीश, गच्छन्ति नूनमधएव हि
बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गज्जीर-
ह्योदधिसंज्ञवायाः, पीयूषतां तव
गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः
परमसंमदसंगन्ताजो, ज्व्या व्रजन्ति
तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वा-
मिन् सुदूस्मवनस्य समुत्पतन्तो,

(५९)

मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः
येऽस्मै न तं विदधते मुनिपुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥
११ ॥ श्यामं गङ्गीरगिरमुज्ज्वलहेम
रत्न, सिंहासनस्पृमिह ज्वयशिखं-
निनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रत्नसेन
नदंतमुचै, श्रामी कराद्रिशिरसीव
नवांबुवाहम् ॥ १३ ॥ उद्गच्छता तव
शितियुतिमंरुलेन, लुप्तच्छदच्छविरशो
क तरुर्वज्रूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि
वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति
कोन सचेतनोपि ॥ १४ ॥ ज्ञोज्ञोः
प्रमादमवधूय ज्ञजध्वमेन,

निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एत
 न्निवेदयति देवजगत्रयाय, मन्ये
 नदन्नजिनन्नः सुरडुडंजिस्ते ॥ १५
 ॥ उद्योतितेषु ज्वता जुवनेषु नाश,
 तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः
 ॥ मुक्ताकलापकलितोद्धृसितातपत्र,
 व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमन्युपेतः
 ॥ १६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्रय-
 पिंनितेन, कांतिप्रताप यशसामिव
 संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्र-
 विनिर्भितेन, सालत्रयेण जगवन्न
 जितोविज्ञासि ॥ १७ ॥ दिव्यसृजो-
 विन नमन्निदशाधिपाना, मुत्सृज्य

(६१)

रत्नरचितानपि मौलिर्वधान् ॥ पादौ
श्रयंति जवतो यदि वा परत्र, त्वत्सं-
गमे सुमनसो न रमंत एव ॥ १७ ॥ त्वं
नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्य सुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥
युक्तं हि पार्थिव निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकशून्यः
॥ १८ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक
दुर्गतस्त्वं, किंवाक्करप्रकृतिरप्यलि-
पिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव
कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व
विकाशहेतुः ॥ १९ ॥ प्राग्ज्ञारसंजृप्त
नजांसि रजांसि, शेषादुच्चापितां

(६२)

कमठेन शठेन यानि ॥ ऋयापि तै-
स्तव न नाथ हताहताशो, ग्रस्तस्त्व
मीजिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥
॥ यदगर्ज्जुर्जितघनौघमदब्रज्जीमं,
ब्रश्यत्तमिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम्
॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृता कृ-
तिमर्त्यमुंरु, पालं ब्रजृद् जयदवक्र-
विनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिज्जवंत-
मपीरितोयः, सोऽस्याऽजवत्प्रतिज्जवं
जवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त
एव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, मारा-

धयंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥
 ज्ञक्तयोद्धसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः,
 पादद्वयं तव विज्ञो नुवि जन्म ज्ञा-
 जः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारज्जववारि-
 निधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवण-
 गोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिष
 धरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मां-
 तरेऽपि तव पादयुगं न देव, मन्ये
 मया महितमीहित दानदहम् ॥ ते-
 नेह जन्मनि मुनीश पराज्जवानां,
 जातो निकेतनमहं म ।
 ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहति

(६४)

लीचनेन, पूर्वं विज्ञोसकृदपि प्रवि-
लोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुर
यंति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधग-
तयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आक-
र्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि ज-
क्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव
दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति
न जावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाश्र-
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य
पुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ जक्त्या
नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखां
श्रेद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

(६५)

निःसंख्यसारशरणं शरणं शरण्यं,
मासाद्य सादितरिपुप्रश्रितावदात्मम्
॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवन्-
ध्यो, बध्योऽस्मि चेद् जुवनपावन
हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवैर्द्वन्द्व
विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक
विज्ञो जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्त्र
देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदं-
तमद्य जयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥
यद्यस्ति नाथ जवदंघ्रिसरोरुहाणां,
जक्तेः फलं किमपि संतति संचिता
याः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य
भूयाः, स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र

(६६)

लांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधि-
यो विधिवज्जिनेऽ, सांशेद्धसत्पुलक
कंचुकितांगजागाः॥ त्वद्बिंबनिर्मल
मुखांबुजबद्धदया, ये संस्तवं तव
विज्ञो रचयंति जग्याः ॥ ४३ ॥
आर्या ॥ जननयनकुमुदचंद, प्रजा
स्वराः स्वर्गसंपदोजुक्त्वा ॥ ते वि-
गलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं
अपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥

इति श्री कल्याणमंदिरनामकं
अष्टमं स्मरणं ॥ ७ ॥



(६७)

॥ अथ बृहत्छांतिस्तवननामक

नवम स्मरण प्रारंभः ॥

॥ नो नो नव्याः शृणुत वचनं
प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिस्तु-
वनगुरोरार्हतां नक्तिज्ञाजः ॥ तेषां
शांतिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रज्ञावा,
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेश विध्वं-
सहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ नो नो नव्य
लोका इह हि नरतैरावत विदेहसं
नवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्या-
सनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौ
धर्माधिपतिः सुघोषा घंटाचालनानं
तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य

सविनयमर्हन्नद्वारकं गृहीत्वा गत्वा
 कनकादिशृंगे विहितजन्मान्निषेकः
 शान्तिमूद्घोषयति यथा ततोऽहं
 कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो
 येन गतः स पंथाः इति ज्ञव्यजनैः
 सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधा-
 य शान्तिमुद्घोशयामि तत्पूजायात्रा
 स्नात्रादि महोत्सवानंतरमिति कृत्वा
 कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां
 स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयं-
 तां प्रीयतां जगवंतोर्हीतः सर्वज्ञाः
 सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोक-
 महिता स्त्रिलोकपूज्या स्त्रिलोकेश्वरा

(६७)

स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ रुद्र
अजित संज्ञव अग्निनंदन सुमति
पद्मप्रज्ञ सुपार्श्व चंद्रप्रज्ञ सुविधि शी
तल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत
धर्म शांति कुंभु अर महि सुनिसु-
व्रत नमिनेमि पार्श्व वर्द्धमानांता जि
नाः शांताः शांतिकरा ज्वंतु स्वाहा
॥ ॐ सुनयो सुनिप्रवरा रिपुविजय
दुर्जिह्वकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु
वोनित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति
मति कीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी
मेधा विद्या साधनप्रवेशननिवेशनेषु
सुगृहीतनामानो जयंतुते जिनेन्द्राः

॥ ॐ रोहिणी प्रकृति वज्रश्रृंगला
 वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता
 काली महाकाली गौरी गांधारी
 सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुद्धा
 अक्षुप्ता मानसी महामानसी षो
 ऋश विद्यादेव्यो रहंतु वोनित्यं स्वा
 हा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रज्ञूति चा
 तुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्ति
 र्जवतु तुष्टिर्जवतु पुष्टिर्जवतु ॥ ॐ
 ग्रहाश्विंश सूर्यांगारक बुध बृहस्पति
 शुक्र शनैश्वर राहु केतुसहिताः सलो
 कपालाः सोम यम वरुण कुबेरवास
 दत्य स्कंदविनायकोपताः ये चा

(७१)

न्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते
सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां अक्षीण कोश
कोष्ठागारानरपतयश्च न्नवंतु स्वाहा
॥ ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद
स्वजनसंबन्धिवन्धुवर्गसहिता नित्यं
चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च
भूमंशलायतनत्रिवालि साधुसाध्वी
श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्या
धिदुःखदुर्जिह्वदौर्मनस्योपशमनाय
शांतिर्नवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिरुद्वृद्धि
मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि
पापानि शाम्यंतु दुरितानि ॥ श
पराङ्मुखा न्नवंतु स्वाहा ॥ २

शान्तिनाम्नाय, नमः शान्तिविधायिनै
 ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाज्य
 चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः
 श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥
 शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृ
 हे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रह
 गतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादि
 तहितसंप, नामग्रहणं जयति शांते
 ॥ ३ ॥ श्रीसंघजगज्जनपद, राजा-
 धिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥ गोष्टिक
 पुरसुख्यानां, आहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्
 ॥ ४ ॥ श्रीभ्रमणसंघस्य शान्तिर्नवतु,
 श्रीपौरजनस्य शान्तिर्नवतु, श्रीजन

(७३)

पदानां शांतिर्नवतु, श्रीराजाधिपानां
शांतिर्नवतु, श्रीराज्यसन्निवेशानां
शांतिर्नवतु, श्रीगोष्टिकानां शांतिर्न
वतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्नवतु,
श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्नवतु ॥ ॐ
स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय
स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रा
स्नात्रायवसानेषु शांतिकलशं गृही
त्वा कुंकुमचंदनकर्पूरांगरुधूपवासकु
सुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्पिकायां
श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्प
वस्त्र चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमा-
ला कंठे कृत्वा शांतिसुदूषोषयित्वा

शान्तिं पानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥
 नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षे, मृजन्ति
 गायन्ति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि
 गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्, कल्याण
 जाजोहि जिनाज्जिपेके ॥ १ ॥ शिव
 मस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता
 ज्वन्तु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु
 नाशं, सर्वत्र सुखी ज्वन्तु लोकाः ॥
 २ ॥ अहं तिष्ठयरमाया सिवोदेवी
 तुम्ह नयर निवासिनी ॥ अम्ह सिवं
 तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं ज-
 वन्तु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः कथं
 यांति, द्विद्यन्ते विघ्नवद्भयः ॥ मनः

(७५)

प्रसन्नतामेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे
॥ ४ ॥ सर्व मंगल भांगल्यं, सर्व
कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व ध-
र्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥

॥ इति बृहद्वांतिनामकं नवम
स्मरणं समाप्तम् ॥

जयतिहुअण स्तोत्र.

जय तिहुअण वर कप्प-रुख
जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण
कल्लाण-कोस डुरिअ करि केसरि;
तिहुअण जण अविलंघि-आण जु-
वण तय सामिअ, कुणतु सुहाइ

(७६)

जिणेर-पास थंजण पुर टिठअ॥१॥
तइ समरंत लहंति-ऊत्ति वर पुत्त
कलत्तइ, धएण सुवएण हिरएण-
पुएण जण जुंजइ रऊइ; पिस्सइ
सुस्स अलंख-सुस्स तुह पास पसा
इण, इअ तिहुअण वर कप्प रुक्क
सुस्सइ कुण मह जिण ॥१॥ जर ज
ऊर परिजुएण-कएण नट्ठुट्ठ सु
कूट्ठिण, चक्खु क्खीण खएण-
खुएण नर सल्लिय सूलिण, तुह
जिण सरणरत्ताय-एण लहु हंति
पुणएणव, जय धनंतरि पासमह
वि तुह रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विज्जा

(७७)

जोइस मंत-तंत सिद्धि अपय
तिण, नुवणऽच्छुनअट्ठविह—सिद्धि
सिज्जहि तुह नामिण; तुह ना
मिण अपवित्त-लुवि जण होइ प
वित्तन, तं तिहुअण-कल्लाण-कोस
तुह पास निरुत्तन ॥४॥ खुद पनत्तइ
मंत-तंत जंताइ विसुत्तइ, चर थिर
गरल गहुग-खग रिन्न वग्गुं वि
गंजइ; दुब्बिय सत्त अणत्त-घत्त नि
त्तारइ दय करि, दुरियइ हरत्तस
पास-देत्त दुरिय करि केसरि ॥ ५ ॥
तुह आणा थंजेइ-नीम देप्पुदधुर
सुरवर रक्कस जरक फाणिंद-विंद

चोरानल जलहर; जलशर चारि
 रजद-खुट पसु जोड़णि-जोड़य, इय
 तिहुअण अविलंधि-आण जय
 पास सुसामि य ॥ ६ ॥ पठिय अठ
 अणठ-तठ जतिवन्नर निवन्नर,
 रोमंचंचिय चारु-काय किन्नर नर
 सुर वर; जसु सेवहि कम कमल-
 जुयल पस्कालिय कलिमलु सो जु
 वणत्तय सामि-पास मइ मदन रिज-
 वलु ॥७॥ जय जोड़य मण कमल-
 नसल जय पंजर कुंजर, तिहुअण
 जण आणंद-चंद जुवण तय दि-
 णयर; जय मइ मेड़णि वारि-वाह

(७९)

जयजंतु पियामह, शंजणय द्विष्य
पास-नाह नाहत्तण कुण मह ॥८॥

बहु विहु वन्तु अवन्तु-सुन्तु व
निजं उप्पनिहि, मुक्क धम्म का
मत्त-काम नर नियनिय सत्तिहि;
जं ज्जायहि बहु दरिस-एत्त बहु
नाम पसिद्धं, सो जोइय मण क
मल-जसल सुहु पास पवद्धं ॥९॥

जय विव्वल रण ऊणिर-इसण अ
रहरिय सरीरय, तरलिय नयण
विसुन्न-सुन्न गग्गरगिर करुणय; तइ
सद्धसत्ति सरंत-हुति नर नासिय
गुरुदर, मह विज्जवि सज्जसइ-

(८०)

पास जय पंजर कुंजर ॥ १० ॥
पइं पाहि वियसंत-नित्त पत्तंत प
वित्तिय, वाह पवाह पवूढ-रूढ डुह
दाह सुपुलइय; मन्नइ मन्नु सजन्नु
पुन्नु अप्पाणं सुरनर, इय तिहु
अण आणंद-चंद जय पास जिणे
सर ॥ ११ ॥ तुह कछ्वाणमहेसु
घंटटंकारऽवपिछिय वल्लिर मल्ल
महल्ल-जत्तिसुरवरगंजुल्लिय, हल्लु
प्फलिय पवत्त-यंति जुवणेवि महू
सव, इय तिहुअण आणंद-चंद
जय पास सुहुब्जव ॥ १२ ॥ नि
म्मल केवल किरण-नियर विहुरिय

(८१)

तम पहयर, दंसिय सयल पयल-
सल विहरिय पहायर; कलि क
लुसिय जण धूय-लोय लोयणह अ
गोयर, तिमिरइ निरु हर पास-
नाह जुवणतय दिणयर ॥ १३ ॥
तुह समरण जल वरिस-सित्त मा
णव मइ मेइणि, अवरार सुहुम
ल-बोह कंदल दल रेइणि; जायइ
फल जर जरिय-हरिय जुह दाह
अणोवम, इय मइ मेइणि वारि-
वाह दिस पास मइ मम ॥ १४ ॥
कय अविकल कल्लाण-वलि उल्लू
रिय जुह वणु, दाविय संग पवग

(५५)

मंग डुगइ गम वारणु; जय जं
तुह जणएण तुह जं जणिय हि
यावहु, रम्सु धम्सु सो जयन-पास
जय जंतु पियामहु ॥ १५ ॥ जुव
णारणय निवास-दरिय परदरिसण
देवय जोइणि पूयण खित्त-वाल
खुदासुर पसुवय; तुह उत्तट्ठ सुन
ट्ठ-सुट्ठु अबिसंट्ठुलु चिट्ठहि,
इय तिहुअण वण सीइ-पास पा
चाइ पणासहि. ॥ १६ ॥ फणि फण
फार फुरंत-रयणकर रंजिय नह
यल-फलिणी कंदल दल-तमाल नि
मल सामल; कमठासुर उवस

ग-वग संसग अगंजिय, जय प
 चरक जिणेस-पास अंजणय पुरट्टि
 ठय. ॥ १७ ॥ मह मणु तरलु प
 माणु-नेय वायावि विसंटूठुलु, नेय
 तणुरऽवि अविणय-सहावु अलस
 विदलंअलु; तुह आहप्पु पमाणु-
 देव कारुण्ण पवित्तन, इय मइ मा
 अवहीरि-पास पालिहि विलवं
 तन. ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिन नेय-
 कलुणु किं किं व न जंपिन, किं
 वन चिट्ठिन किट्ठू-देव दीणय
 मऽवलंविन, कासु न किय निप्फल्ल
 लल्लि अम्हेहि उहत्तिहि, तहवि

न पत्तनु ताणुं-किंपि पइ पहु परि
 चत्तिहि. ॥ १९ ॥ तुहु सामिनु तुहु
 माह-बप्पु तुहु मित्त पियंकरु, तुहु
 मइ तुहु मइ तुहुजि-ताणु तुहु
 गुरु स्वेमंकरु, हनं तुहु जर जा
 रिनु-वराजु राजु निवज्जगह, ती
 णनु तुहु कम कमल-सरणु जिण
 पालहि चंगह. ॥ २० ॥ पइ किवि
 कय नीरोय-लोय किवि पाविय सु
 हसय, किवि मइमंत मइमंत-केवि
 किवि साहिय सिव पय; किवि गं
 जिय रिनुवग्ग-केवि जसघवलिय
 नूयल, मइ अवहोरहि केष-पास

(८५)

सरणागयवञ्जल. ॥ ११ ॥ पञ्चुवया
र निरीह-नाह निपन्न पन्नयण, तुह
जिण पास परोव-यार करणिक
परायण; सत्तु मित्त समचित्त-वि
त्ति नयनिंदय सममण, मा अवही
रिय ऽजुग्ग-उविमइं पास निरंजण
॥११॥ इन्न बहुविहउह तत्त-गत्तु तु
ह उह नासण परु, इन्न सुयणह
करुणिक-ठाणु तुहु निरु करुणापरु;
इन्न जिण पास असामि-सालु तुहु
तिहुअण सामिय, जं अवही
रहि मइं-ऊखत इय पास न सो
हिय ॥ १२ ॥ जुग्गाऽजुग्ग विज्जा
ग-नाह नहु जोयहि तुह सम, चु.

धणुवयार सहाव-जाव करुणा रस
 सत्तम, सम विसमइं किं घणु-निय
 इ जुवि दाह समंतन, इय डुहि
 बंधव पास-नाह मइ पाल शुणंतन.
 ॥ ९४ ॥ नय दीणह दीणयुं-मुयवि
 अन्नवि किवि जुगगय, जं जोइवि
 नवयार-करहि नवयार समुज्जय;
 दीणह दीणु निहीणु-जेण तइ ना
 हिण चत्तन, तो जुगगन अहमेव-
 पास पालहि मइ चंगन. ॥ ९५ ॥
 अह अन्नवि जुगगय वि-सेसु किवि
 मन्नहि दीणह, जंपासिवि नवयारु-
 करइ तुह नाह समग्गह; सुच्चिय
 किल कद्धाणु-जेण जिण तुम्ह प-

(८७)

सीयह, किं अत्रिण तं चैव-देव मां
मऽ अवहीरह. ॥ २६ ॥ तुह पत्थ
ए न हु होऽ-विहलु जिण जाणउ
किं पुण, हउ डुरिकिय निरुसत्त-
चच डुकहु नस्सुयमण; तं मन्नउ
निमिसेण-एउ एउवि जइ लब्भइ
सच्चं जं डुरिकिय व-सेण किं उंवहु
पच्चइ. ॥ २७ ॥ तिहुअण सामिय
पास-नाइ मइ अप्पु पयासिउ, कि
ऊउ जं निय रुक्-सरिसु न मुणउ
वहु जंपिउ, अन्न न जिण जग्गि
तुह समो वि दखिन्नु दयासउ, जइ
अवगन्नसि तुह जि-अहह कह हो
हु दयासउ. ॥ २८ ॥ जइ तुह रु

धणुवयार सहाव-जाव करुणा रस
 सत्तम, सम विसमइं किं घणु-निय
 इ जुवि दाह समंतन, इय डुहि
 बंधव पास-नाह मइ पाल शुणंतन.
 ॥ ३४ ॥ नय दीणह दीणयुं-मुयवि
 अन्नवि किवि जुगगय, जं जोइवि
 नवयार-करहि नवयार समुज्जय;
 दीणह दीणु निहीणु-जेण तइ ना
 हिण चत्तन, तो जुगगन अहमेव-
 पास पालहि मइ चंगन. ॥ ३५ ॥
 अह अन्नवि जुगगय वि-सेसु किवि
 मन्नहि दीणह, जंपासिवि नवयारु-
 करइ तुह नाह समग्गह; सुच्चिय
 किल कल्लाणु-जेण जिण तुम्ह प-

(८४)

सीयह, किं अन्निण तं चैव-देव मां
मइ अवहीरह. ॥ २६ ॥ तुह पत्थ
ण न हु होइ-विहलु जिण जाणउ
किं पुण, दउ डुक्खिय निरुसत्त-
चच डुकहु उस्सुयमण; तं मन्नउ
निमिसेण-एउ एउवि जइ लव्वजइ
सच्चं जं च्छुक्खिय व-सेण किं उंवहु
पच्चइ. ॥ २७ ॥ तिहुअण सामिय
पास-नाइ मइ अप्पु पयासिउ, कि
ज्जउ जं दिय रुक्-सरिसु न मुणउ
वहु जंपिउ, अन्न न जिण जग्गि
तुह समो वि दखिन्नु दयासउ, जइ
अवगन्नसि तुह जि-अइह कइ दो
सु हयासउ. ॥ २८ ॥ जइ

विण किण वि-पेय पाइण वेत्तविंय
 उ, तुवि जाणउ जिण पास-तुहि
 हनं अंगीकरिउ; इय मह इत्थिउ
 जं न-होइ सा तुह उहावणु, रक्खं
 खंतह निय कित्ति-णेय जुज्झइ अव
 हीरणु ॥ १ए ॥ ए हमहारिय जत्त
 देव इहु न्हवण महसउ, जं अण
 लिय गुणगहण-तुह सुणि जण अ
 णिसिद्धउ; एम पसीय सुपास-नाह
 अन्नण पुरट्ठिय, इय सुणिवरु सि
 रि अन्नय-देउ विन्नवइ अणिंदिय.

॥ इति श्री जयतिहुअण स्तोत्रं संपूर्णं ॥
 मिति नमं नवतु सकलस्य जगतः शान्तिः



(७६)
॥ श्री ॥

॥ जिनपञ्जरस्तोत्र. ॥

कमलप्रज्ञाचार्यविरचितम्.

ॐ ह्रीं श्रीं अँर्ह अर्हज्यो न
मोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अँर्ह सि
द्धेज्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
अँर्ह आचार्येज्यो नमोनमः ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं अँर्ह उपाध्यायेज्यो नमो
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अँर्ह गौतमप्र
मुखसर्वसाधुज्यो नमोनमः ॥ १ ॥
एष पञ्चनमस्कारः, सर्व पापक्षयं
करः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं

जवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ नै नै श्री
 जये विजय, अर्ह परमात्मने नमः॥
 कमलप्रज्ञसूरीन्धो, ज्ञापते जिनप
 ज्ञरम् ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन,
 त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽजि
 लपितं सर्वं, फलं स लभते शु
 बम् ॥ ४ ॥ जूशय्याब्रह्मचर्येण, क्रो
 धलोज्जविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवि
 त्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥
 अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षु
 र्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्य
 नपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ सा
 धुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं वि

(ए१)

धाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी;
सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मद
नक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥
अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवं
करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांच जितो रक्षे-
दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां
परब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां प
रमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामी,
शानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं
जगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥
रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु स
कलं कुलम् ॥ ११ ॥ रूपज्ञो मस्तकं

जवति मङ्गलम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं
 जये विजय, अर्ह परमात्मने नमः॥
 कमलप्रज्ञसूरीन्धो, ज्ञाषते जिनप
 ज्ञरम् ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन,
 त्रिकालं यः पठेदिदम् ॥ मनोऽग्नि
 लपितं सर्वं, फलं स लभते शु
 बम् ॥ ४ ॥ जूशय्याब्रह्मचर्येण, को
 धलो जनिवर्जितः ॥ देवताग्रे पवि
 त्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥
 अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षु
 र्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्य
 न्नाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ सा
 धुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं वि

(ए१)

धाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधी;
सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मद
नक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥
श्रङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेश्वरी शिवं
करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशांच जिनो रक्षे-
दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां
परब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥
पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां प
रमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामी,
शानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं
जगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥
रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु स
कलं कुलम् ॥ ११ ॥ रुषन्तो मस्तकं

(ए१)

रक्ते-दजितोऽपि विलोचनम् ॥ सं
जवः कर्णयुगलेऽग्निनन्दनस्तु ना
सिके ॥ १२ ॥ उष्ट्रो श्रीसुमतो रक्ते
दन्तान्पद्मप्रज्ञो विजुः ॥ जिह्वां सु
पार्श्वेदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रज्ञाजि
धः ॥ १३ ॥ कंठ श्रीसुविधी रक्तेद,
हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो वा-
हुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥ १४ ॥
अङ्गुलीर्विमलो रक्तेदनन्तोऽसौ न
खानपि ॥ श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि,
श्रीशान्तिर्नान्निमलम् ॥ १५ ॥
श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्तेदरो लोमकटी
तटम् ॥ मह्निरुरुपृष्ठवंशं, जङ्घ च

(ए३)

पुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादाङ्गुलीर्नमी-
रक्षे-ह्रीनमिश्ररणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व-
नाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्म-
कम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क-
वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेष
पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥
राजद्वारे स्मशाने च, संश्रामे शत्रु
संकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादिभूत-
प्रेतज्जयाशिते ॥ १९ ॥ आकाले म-
रणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥
अपुत्रत्वे *महादुःखे, मूर्खत्वे रोगे

* महादोषे.

(ए४)

पीमिते ॥ १० ॥ माकिनीशाकिनी
अस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्ता
रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्म
रेत् ॥ ११ ॥ प्रातरेव समुच्चाय, यः
स्मरे जिनपञ्जरम् ॥ तस्य किञ्चि
न्नयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदः ॥ १२ ॥
जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवास
रम् ॥ कमलप्रजराजेन्द्र-श्रियं स
लज्जते नरः ॥ १३ ॥ प्रातः समु
च्चाय पठेत्कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जि
नपञ्जरस्य ॥ आसादयेद्ब्रूकमलप्र-
जाख्यं, लक्ष्मीमनोवाञ्छितपूरणाय ॥

(ए५)

शीरुड्पल्लीयवरेण्यगङ्गे, देवप्रज्ञा-
चार्यपदाब्जहंसः ॥ वादीन्डचूराम-
णिरेष जैनो, जीयाङ्गुरुः श्रीकमल-
प्रज्ञाख्यः ॥

॥ इति श्रीकमलप्रज्ञाचार्यविरचित
सर्वरक्षाकरं श्रीजिनपञ्जरस्तोत्रं
समाप्तम् ॥

१

१ आ श्लोक मूल पुस्तकमां नथी,
परंतु कमलप्रज्ञाचार्यना शिष्ये बनावेल
वे एम लागे वे.

॥ श्री ॥

॥ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु
 रुजाषितम् ॥ ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि,
 ज्ञव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जन्म
 लग्ने च राशौ च, यदा पीड्यन्ति खे
 चराः ॥ तदा संपूजयेद्दीमान्, खे
 चरैः सहिताजिनान्. ॥ २ ॥ पुष्पै
 र्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः ॥
 वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणा
 न्वितैः ॥ ३ ॥ पद्मप्रज्ञश्च मार्तिरु
 श्रन्द्श्चन्द्रप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्यो

(ए७)

भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः॥४॥
विमलानन्तधर्माऽराः, शान्तिः कु
न्युर्नमिस्तथा ॥ वर्धमानो जिने
न्दाणां, पादपद्मे बुधो न्यसेत् ॥५॥
रुषजाजितसुपार्श्वाश्चाग्निनन्दन शी
तलौ ॥ सुमतिः संज्ञवस्वामी, श्रे
यांसश्च बृहस्पतिः ॥ ६ ॥ सुविधैः
कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥
नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः
श्रीमल्लीपार्श्वयोः ॥ ७ ॥ जिनाना
मग्रतः कृत्वा, ग्रहरणां शान्तिहेतवे॥
नमस्कारशतं जक्त्या, जपेदष्टोत्तरं
शतम् ॥ ८ ॥ जङ्गादूरुवाचैवं, प

(९८)

धमश्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पू
र्वाद्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गा
रकबुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्वर राहु के
तुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतो व
स्तिष्ठन्तु, मम धनधान्यजयविजय
सुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशांति
तुष्टिपुष्टिबुद्धिब्रह्मी धर्मार्थकामदाः
स्युः स्वाहा ॥

॥ इति श्रीग्रहशान्तिस्तोत्रं
समाप्तम् ॥



(१७७)

अथ श्रीपार्श्वनाथस्य

॥ मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः
परमशंकरः ॥ नाथः परमेशक्तिश्च,
शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्व वि
घ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥
सर्वसत्त्वहितो योगी, श्रीकरः पर
मार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्ध,
श्रिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मा
परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥
जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, जूतेशः पुरु
षोत्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्री

(१००)

निवासः शुन्नार्णवः॥४॥ सर्वज्ञःसर्व
देवेशः, सर्वदःसर्वगोत्तमः॥ सर्वात्मा
सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः॥५॥
तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्मप्रका-
शकः॥ परमेन्दुः परप्राणः, परमामृ-
तसिद्धिदः ॥६॥ अजः सनातनः श-
म्भुरीश्वरश्च सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः
प्रमोदात्मा, क्षेत्राधिपः शुन्नप्रदः॥७॥
साकारश्च निराकारः, सकलो निष्क-
लोऽव्ययः ॥ निर्ममो निर्विकारश्च,
निर्विकल्पो निरामयः॥८॥ अमरश्चा-
जरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः॥
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो नि-

(१०१)

रञ्जनः ॥ ए ॥ नैकाराकृतिरव्यक्तो,
व्यक्तरूपस्त्रयीमयः ॥ ब्रह्मद्वय प्रका
शात्मा, निर्जयः परमाक्षरः ॥ १० ॥ दि
व्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽ
च्युतः ॥ आद्योऽनाद्यः परेशानः, पर
मेषो परः पुमान् ॥ ११ ॥ शुद्धस्फटि
कसंकाश, स्वयंभूः परमाच्युतः ॥
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोका-
वज्ञासकः ॥ १२ ॥ ज्ञानात्मा परमा-
नन्दः, प्राणरूढो मनःस्थितिः ॥
मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः
परापरः ॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः,
सर्वदेवमयप्रभुः ॥ जगवान् सर्वत-

(१०९)

त्वैशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥१४॥
इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य ज-
गद्गुरोः॥ दिव्यमष्टोत्तरं नामशतमत्र
प्रकीर्तितम् ॥१५॥ पवित्रं परमं ध्येयं,
परमानन्ददायकम् ॥ नुक्तिमुक्तिप्रदं
नित्यं, पठते मङ्गलप्रदम् ॥१६॥ श्रीम
त्परमकल्याण सिद्धिः श्रेयसेऽस्तु
वः॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, जग
वान् परमः शिवः ॥ १७॥ धरणेन्द्र
क्षणञ्चालंकृतो वः श्रियं प्रप्नुः ॥
दद्यात्प्रज्ञावतीदेव्या, समधिष्ठितशा-
सनः॥१८॥ ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, श्री
पार्श्व जगदीश्वरम् ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥

(१०३)

समायुक्तं, केवलज्ञानज्ञास्करम् ॥ १९ ॥
पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण द
क्षिणे ॥ परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्ररा
जेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्टपत्रस्थितैः
पञ्चनमस्कारैस्तथा त्रिभिः ॥ ज्ञानाद्यै
र्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥
शतषोडशदलारूढं, विद्यादवीजिर
न्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं
मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ मायावेष्टय
त्रयाग्रस्थं, कौकारसहितं प्रभुम् ॥
नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृ
तम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्य,
चतुर्वीजान्वितौर्जिनैः ॥ चतुरष्टदश

(१०४)

वीति, विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ १४ ॥
दिक्षु ककारयुक्तेन, विदिक्षु लाङ्कि-
तेन च ॥ चतुरस्रेण वज्राङ्ककिति
तत्वे प्रतिष्ठितम् ॥ १५ ॥ श्रीपार्श्व-
नाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् ॥
तं सर्वपाप निर्मुक्तं, जजते श्रीः शु-
भप्रदा ॥ १६ ॥ जिनेशः पूजितो न
क्तया, संस्तुतः प्रस्तुतोऽश्रवा ॥ ध्या-
तस्त्वं यैः क्लृप्तं वापि, सिद्धिस्तेषां
महोदया ॥ १७ ॥ श्री पार्श्वमन्त्रारा-
जान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥
शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्लृप्तपञ्च-
॥ १८ ॥ रुद्रिसिद्धिमहा-

बुद्धिधृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ॥ मृ
 त्युं जयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो
 जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्या
 क्षरामृत्युविवर्जितः ॥ अणिमादिम
 हासिद्धिं, लक्षजपेन चाप्नुयात् ॥ ३०
 प्राणायाममनोमन्त्रयोगादमृतमात्म
 नि ॥ त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वा
 मिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ इ
 षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्य
 दः ॥ पातु वः परमानन्दलक्षणः सं
 स्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्त्वरूपमिदं
 स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम् ॥ त्रिसं-
 ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स
 श्रियम् ॥ ३३ ॥

(१०६)

॥ अथ ऋषिमंजल स्तोत्र ॥

आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंवाप्य
यत्स्थितं ॥ अग्निज्वाला समंनाद ।
बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वा
लासमाक्रांतं । मनोमलविशोधकं ॥ दे
दीप्यमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि नि
र्मलं ॥ २ ॥ अर्द्धमित्यक्षरं ब्रह्म । जं
चकंपरमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्ग्रीवा
। सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ न
मोर्हदृज्य ईशेज्यः ॥ ॐ सिद्धेज्यो नमो
नमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिज्यः ॥ उपाध्या
येज्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधु
ज्यः ॥ ॐ ज्ञानेज्यो नमो नमः ॥ ॐ न
मस्तत्त्वदृष्टिज्य ॥ श्वारित्रेज्यस्तु ॐ

नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्येत ।
 दर्हदाद्यष्टकं शुभं ॥ स्थानेष्वष्टसु वि-
 न्यस्तं । पृथग्बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥
 आद्यं पदं शिखां रक्ते । त्परं रक्ते तु मस्त-
 कं ॥ तृतीयं रक्ते त्रेत्रे । तुर्यं रक्ते च-
 नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्ते ।
 षष्ठं रक्ते च घंटिकां ॥ नाभ्यंतं सप्तमं रक्ते-
 । ऽङ्गेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रण-
 वतः सांत । सरेफोद्यब्धिपंचषान्
 ॥ सप्ताष्टदशसूर्याकान् । श्रितो बिंदु-
 स्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा-
 आद्याः । पंचातो ज्ञातदर्शन ॥ श्रारि-
 त्रेभ्यो नमो मध्ये । ईं सांत ह्र सम्-
 लंकृतः ॥ १० ॥ ❀ ॥ नूं । झूं । झीं ।

ॐ । ॐ । ॐ । ॐ । ॐ । ॐ ॥ असि
 आनुसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः
 ॥ ❀ ॥ जंबूवृक्षधरोष्ठीपः । क्षारोदधिस
 मावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट । काष्ठाधि
 ष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्य संगतो
 मेरुः । कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्त
 रस्तार । स्तारामंरुलमंरितः ॥ १२ ॥
 तस्योपरिसकारांतं । बीजमध्यास्य
 सर्वगं ॥ नमामि बिंबमाहृत्यं । लला
 टस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयंनिर्म
 लंशांतं । बहुलं जामयतोऽज्जितं ॥ नि
 रीहं निरहंकारं । सारं सारतरंधनं ॥
 १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं । सात्वि
 कं राजसंमतं ॥ तामसं चिरसंबुद्धं

(१०८)

तैजसंशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारंच
निराकारं । सरसं विरसंपरं ॥ परापरं
परातीतं । परंपर परापरं ॥ १६ ॥ ए
कवर्णं द्विवर्णंच । त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं ॥
पंचवर्णं महावर्णं । सपरंच परापरं
॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं । निर्वृतं
अतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं ।
निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्र
ह्मसंबुद्धं । बुद्धं सिद्धं मतंगुरु ॥ ज्यो
तीरूपं महादेवं । लोकालोक प्रका
शकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णीतः ।
सरेफोविंदुमंभितः ॥ तुर्यस्वरसमा
युक्तो । बहुधानादमालितः ॥ २० ॥
अस्मिन्नीजे स्थिताः सर्वे । ऋषिणा

(११०)

द्याजिनोत्तमाः॥वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः॥
ध्यातव्या स्तत्रसंगताः ॥ ११ ॥ नाद
श्रृङ्गसमाकारो । बिन्दुर्नीलसमप्रज्ञः॥
कलारुणसमासांतः । स्वर्णान्नः सर्व
तोमुखः ॥१२॥ शिरःसंलीन ईका-
रो । विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानु
सारसंलीनं । तीर्थकृन्मंरुलंस्तुमः॥
१३ ॥ चंद्रप्रज्ञ पुष्पदंतौ । नादस्थि
तिसमाश्रितौ ॥ बिंदुमध्यगतौनेमि ।
सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥१४॥ पद्मप्रभु
वासुपूज्यौ । कलापदमधिष्ठितौ ॥ शि
रईस्थितिसंलीनौ । पार्श्वमह्वी जिने
श्वरौ ॥ १५ ॥ शेषास्तीर्थकृतःसर्वे ।
हरस्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजः

(१११)

हरंप्राप्ता । श्वतुर्विंशतिरर्हतां ॥२६॥
गतरागद्वेषमोहाः । सर्वपापविवर्जि
ताः ॥ सर्वदाः सर्वकालेषु । ते ज्वंतु
जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यश्च
क्रं । तस्य चक्रस्य या विज्जा ॥ तया ह्य
दित सर्वाङ्गं । मामांहीनस्तु माकि
नि ॥ २७ ॥ देवदेवस्य ० । मामांहीन
स्तु राकिनी ॥ २८ ॥ देवदेव ० । मामां
हीनस्तु लाकिनी ॥ २९ ॥ देवदेव ० । मा
मांहीनस्तु काकिनी ॥ ३० ॥ देवदेव ० ।
मामांहीनस्तु शाकिनी ॥ ३१ ॥ देव ० ।
मामांहीनस्तु हाकिनी ॥ ३२ ॥ देव ० ।
मामांहीनस्तु याकिनी ॥ ३३ ॥ देव ० ।
मामांहीनस्तु पणगाः ॥ ३४ ॥ देव ०

(११९)

मामांहिसंतु हस्तिनः ॥३६॥ देवदे० ।
मामांहिसंतु राक्षसाः ॥३७॥ देव० ।
मामांहिसंतु वण्हयः ॥३८॥ देव० ।
मामांहिसंतु सिंहकाः ॥३९॥ देव० ।
मामांहिसंतु दुर्जनाः ॥४०॥ देव० ।
मामांहिसंतु भूमिपाः ॥४१॥ श्रीगौ
तमस्ययामुश । तस्यायान्नुविलब्ध
यः ॥ तान्नि रज्जुद्यतज्योति । रहंस
र्वनिधोश्वराः ॥४२॥ पातालवासिनो
दवा । देवान्नूपीठि वासिनः ॥ स्वर्वा
सिनोपि ये देवाः । सर्वे रक्षंतु मामि
तः ॥४३॥ येऽवधिलब्धयो येतु । प
रमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयोदे
वाः । मांस रक्षंतु सर्वदा ॥४४॥ दु

(११३)

जनाज्ञतवेत्तालाः । पिशाचामुज्जत्रा
स्तथा ॥ ते सर्वेप्युपशाम्यंतु । देवदेव
प्रज्ञावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृ
ति र्लक्ष्मी । गौरी चंद्री सरस्वती ॥
जयांबा विजयानित्या । क्लिप्ता जि-
ता मदङ्गा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम
बाणाच । सानंदानंदमालिनी ॥ मा
या मायाकिनी रौडि । कला काली
कलि प्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा म
हादेव्यो । वर्त्ततेयाजगत्त्रये ॥ मह्यं
सर्वाःप्रयच्छंतु । कांतिकीर्तिधृतिमतिं
॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सद्गुः प्राप्यः ।
श्रीऋषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ
नाथेन । जगत्त्राण कृतेनघः ॥ ४९ ॥

(११४)

रणराज कुलेवन्हौ । जलेडुर्गे गजे
हरौ ॥ इमशाने विषिने घोरे । स्मृतो
रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यं ब्रष्टा
निजं राज्यं । पदं ब्रष्टा निजं
पदं ॥ लक्ष्मीं ब्रष्टा निजं लक्ष्मीं ।
प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्या
र्थां लज्जते ज्ञार्या । पुत्रार्थी लज्जते
सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं । नरः
स्मरणं मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णरूपे
षट्केकांस्ये । लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥
तस्यैवाष्टमहासिद्धिः । गृहे वसति शा
श्वती ॥ ५३ ॥ जूर्यपत्रे लिखित्वेदं ।
गलके मूर्द्धनि वा जुजं ॥ धारितं स
र्वदा दिव्यं । सर्वजीति विनाशकं ॥

५४ ॥ जूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः । पिशाचैर्भु-
 जलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्वैकैः । सुख्य-
 ते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्व-
 ख्यपीठः । वर्त्तिनः शाश्वताजिनः ॥
 तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टैः । यत्फलं तत्फलं
 श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतज्ज्ञेयं महास्तोत्रं ।
 न देयं यस्य कस्यचित् ॥ मिथ्यात्ववा-
 सिने दत्ते । बालहत्यापदे पदे ॥ ५७ ॥
 आचाम्नादितपः कृत्वा । पूजयित्वा
 जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्रिको जापः ।
 कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतम-
 षोत्तरं प्रातः । ये पठन्ति दिने दिने ॥ ते
 पांनव्याधयोद्वेहे । प्रज्ज्वन्ति न चापदः
 ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधि यावत् । प्रातः

(११६)

प्रातस्तुयः पठेत् ॥ स्तोत्रमेतन्महाते
जो । जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे
सत्यर्हतोविंबे । ज्वेसप्तमके ध्रुवं ॥ पदं
प्राप्नोति शुद्धात्मा । परमानंदनंदितः
॥ ६१ ॥ विश्ववंद्योज्वेध्याता । कळ्या
णानि चसोश्रुते ॥ गत्वास्थानं परं सो
पि । जूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं
स्तोत्रं महास्तोत्रं । स्ततीनामुत्तमं प
रं ॥ पठनात्स्मरणाऽऽपा । ह्यन्यते
पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंजुल
स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकान्निराकृत्यमूल
यं त्रकळपानुसारेण ॥ लिखितं ॥ ग
णिः श्री कृमाकळ्याणोपाध्यायैः ॥
तस्म्योपरिमयापि लिखितं इदं स्तोत्रं ॥

(११७)

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्री तत्त्वार्थसूत्रम् ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मो-
क्षमार्गः १ ॥ तत्त्वार्थश्च ज्ञानं सम्यग्द-
र्शनम् २ ॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ३ ॥
जीवाजीवाश्रवबंधसंवर निर्जरामो-
क्षास्तत्त्वम् ४ ॥ नामस्थापनाद्भ्यज्ञाव-
तस्तन्त्यासः ५ ॥ प्रमाणनयैरधिगमः
६ ॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरण-
स्थितिर्विधानतः ७ ॥ मतिश्रुतावधि-
मनःपर्यायैकेवलानी ज्ञानम् ८ ॥ स-
त्त्वंख्याक्तेत्रस्पर्शनकालांतरज्ञावाट्प

बहुत्वैश्च ए ॥ तत्प्रमाणे १० ॥ आद्यै
 परोक्षम् ११ ॥ प्रत्यक्षमन्यत् १२ ॥ म
 तिस्मृतिसंज्ञाचिन्ताजिनिबोध इत्यन
 र्थांतरम् १३ ॥ तदिन्द्रियानिन्द्रियनि-
 मित्तम् १४ ॥ अवग्रहेहापायधारणाः
 १५ ॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदि
 ग्धधृवाणां सेतराणाम् १६ ॥ अर्थस्य
 १७ ॥ व्यंजनस्यावग्रहः १८ ॥ न चक्षु
 रनिन्द्रियान्याम् १९ ॥ श्रुतं मतिपूर्वं
 ध्यनेकद्वादशज्ञेदम् २० ॥ द्विविधो
 ऽवधिः २१ ॥ जवप्रत्ययो नारकदेवा
 नाम् २२ ॥ यथोक्तनिमित्तः षड्विक
 ल्पः शेषाणाम् २३ ॥ ऋजुविपुलमती

(११ए)

मनः पर्यायः २४॥ विशुद्ध्यप्रतिपाता
ज्यां तद्विशेषः २५ ॥ विशुद्धिक्षेत्र
स्वामिविषयज्योऽवधिमनःपर्याययोः
२६ ॥ मतिश्रुतयोर्निबंधः सर्वद्रव्येष्व
सर्वपर्यायेषु २७ ॥ रूपिष्ववधेः २८॥
तदनंतज्ञागे मनःपर्यायस्य २९॥ सर्व
द्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ३० ॥ एकादी
निज्ञाज्यानि युगपदेकस्मिन्नाचतुर्न्यः
३१ ॥ मतिश्रुतावधयो (मतिश्रुतावि
ज्ञां) विपर्ययश्च ३२ ॥ सदसत्तोरवि
शेषाद्यदृष्टोपलब्धेरुन्मत्तवत् ३३ ॥ नै
गमसंग्रह व्यवहारर्जुसूत्रशब्दा नयाः
३४ ॥ आद्यशब्दौ द्वित्रिज्ञेदौ ३५ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

(१९०)

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ जावौ मि-
श्रश्च जीवस्य स्वतत्त्वमौदयिकपारि-
णामिका च १ ॥ छिनवाष्टादशकैर्वि-
तित्रिजेदा यश्चाक्रमन् २ ॥ सम्यक्तव-
चारित्रे ३ ॥ ज्ञानदर्शनदानलान्ननो-
गोपन्नोगवीर्याणि च ४ ॥ ज्ञानाज्ञान-
दर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रिपञ्चजे-
दाः सम्यक्तवचारित्रसंयमासंयमाश्च
५ ॥ गतिकषायलिंगमिष्ट्यादर्शनाज्ञा-
नासंयता सिद्धत्वलेश्याश्चतुरूपेकैकै-
कैकषमूजेदाः ६ ॥ जीवन्नव्यान्नव्य-
त्वादीनि च ७ ॥ उपयोगो लक्षणम्
८ ॥ सद्द्विविधोऽष्टचतुर्जेदः ९ ॥ संसा-

रिणा सुक्ताश्च १० ॥ समनस्का अम
 नस्काः ११ ॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः
 १२ ॥ पृथिव्यंदुवनस्पतयः स्थावराः
 १३ ॥ तेजोवायुर्धौर्दियादयश्च तसाः
 १४ ॥ पंचेन्द्रियाणि १५ ॥ द्विविधानि
 १६ ॥ निर्वृत्युपकरणे इव्येन्द्रियम् १७
 ॥ लब्ध्युपयोगौ ज्ञावेन्द्रियम् १८ ॥ न
 पयोगः स्पर्शादिषु १९ ॥ स्पर्शनरस
 न घ्राण चक्षुःश्रोत्राणि २० ॥ स्पर्शरस
 गंधरूपशब्दस्तेषामर्थः २१ ॥ श्रुतम
 नांन्द्रियस्यार्थः २२ ॥ वाय्वंतानामेकम्
 २३ ॥ कृमिपिपीलिकात्रमरमनुष्यादी
 नामेककवृद्धानि २४ ॥ संज्ञिनः सम

(१२२)

नस्काः २५ ॥ विग्रहगतौ कर्मयोगः
२६ ॥ अनुश्रेणिगतिः २७ ॥ अविग्रहा
जीवस्य २८ ॥ विग्रहवती च संसारि
णः प्राक्चतुर्न्यः २९ ॥ एकसमयोऽ
विग्रहः ३० ॥ एकं द्वौ चानाहारकः
३१ ॥ संमूर्धनगर्जोपपाताजन्मः ३२ ॥
सचित्तशीतसंवृत्ताः सेतरामिश्राश्चैक
शस्तद्योनयः ३३ ॥ जराय्वंरुपोतजा
नां गर्जः ३४ ॥ नारकदेवानामुपपातः
३५ ॥ शेषाणां संमूर्धनम् ३६ ॥ औदा
रिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानिश
रीराणि ३७ ॥ परंपरं सूक्ष्मम् ३८ ॥ प्र
देशतोऽसंख्येयगुणं प्राक्तैजसात् ३९

(१२३)

॥ अनंतगुणोपरे ४०॥अप्रतिघाते ४१
॥ अनादिसंबन्धे ४२ ॥ सर्वस्य ४३ ॥
तदादीनि ज्ञाज्यानि युगपदेकस्याच
तुर्च्यः ४४॥ निरूपज्जोगमन्त्यम् ४५॥
गर्जसंमूर्च्छनमाद्यम् ४६॥ वैक्रियमौप
पातिकम् ४७॥ लब्धिप्रत्ययं च ४८॥
शुभ्रं विशुद्धमव्याधाति चाहारकं च
तुर्दशपूर्वधरस्यैव ४९ ॥ तैजसमपि
५०॥नारकसंमूर्च्छिनो नपुंसकानि ५१
॥ न देवाः ५२ ॥ औपपातिकचरमदे
होत्तमपुरुषासंख्येयवर्षायुषोऽनपव-
त्यायुर्षः ५३ ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमोम-
 हातमः प्रज्ञाभूमयोधनांबुवाताकाश
 प्रष्ठितोः सप्तवोऽवः पृथुतराः १॥ तासु
 नारकाः २॥ नित्याशुजतरलेदयापरि
 णामदेहवेदनाविक्रियाः ३॥ परस्परो
 दीरितदुःखाः ४ ॥ संह्रिष्टासुरोदीरि
 द्युतःखाश्च प्राक्चतुष्टयाः ५ ॥ तेष्वेक
 त्रिसप्तदशसप्तदशद्वाविंशतित्रय त्रिं
 शत्सागरोपमा सत्वानां परा स्थितिः
 ६॥ जंबूद्वीपलवणादयः शुभ्रनामानो
 द्वीपसमुद्राः ७ ॥ द्विर्द्विर्विष्कंजाः पू
 र्वपरिक्षेपिणो वलयाकृतयः ८॥ तन्म

ध्येमेरुनाजिर्वृत्तो योजनशतसहस्रवि
 ष्कंजो जंबूद्वीपः ए ॥ तत्रजरतदै
 मवतहरिविदेहरम्यक् दैरण्यवतैराव
 तवर्षाः क्षेत्राणि १७ ॥ तच्छिन्नाजिनः
 पूर्वापरायताहिमवन्महा हिमवन्निष
 धनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वताः
 ११ ॥ किर्धातकीखंमे १२ ॥ पुष्करार्धे
 च १३ ॥ प्राक्मानुपोत्तरान्मनुष्याः १४
 ॥ आर्याम्लिशश्च १५ ॥ जरतैरावतवि
 देहाः कर्मजूमयोऽन्यत्र देवकुरुत्तरकु
 रुज्यः १६ ॥ नृस्त्रिती परापरे त्रिप
 ल्योपमांतर्मुहूर्त्ते १७ ॥ तिर्यग्योनीनां
 च १८ ॥ ॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

(१२६)

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकायाः १॥ तृतीयःपी
तलेश्यः २॥ दशाष्टपंच द्वादशविक-
टपाः कटपोषपन्नपर्यन्ताः ३॥ इंडसा
मानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्तलो
क पालानीक प्रकीर्णकान्नि योग्यकि
ट्विषिकाश्चैकशः ४॥ त्रायस्त्रिंशलोक
पालवर्जा व्यंतरज्योतिष्काः ५॥ पूर्व
योर्द्दीप्ताः ६॥ पीतांतलेश्याः ७॥ का
यप्रवीचारा आऐशानात् ८ ॥ शेषाः
स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराद्वयोर्द्वयो
ए॥ परेऽप्रवीचाराः १०॥ ज्वनवासि
नोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनि

(१२७)

तोदधिद्वीपदिवकुमाराः ११ ॥ व्यंत
राः किंनराकिंपुरुषमहोरग गांधर्वयक्ष
राक्षसज्ञूतपिशाचाः १२ ॥ ज्योतिष्का
सूर्याचंद्रमसोग्रहनक्षत्रप्रकीर्णताराश्च
१३ ॥ मेरुप्रदक्षिणानित्यगतयो नृलो
के १४ ॥ तत्कृतः कालविज्ञागः १५ ॥
वहिरवस्थिताः १६ ॥ वैमानिकाः १७
॥ कल्पोपपन्नाः कल्पपातीताश्च १८ ॥
उपर्युपरि १९ ॥ सौधर्मेशानसनत्कुमा
रमाहेंद्रब्रह्मलोकलांतकमहा शुक्रस
हस्रारेण्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयो
र्नवसुग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंताप
राजितेषु सर्वार्थसिद्धे च २० ॥ स्थि

(१५८)

तिप्रज्ञावसुखद्यु तिलेश्याविशुद्धींदि
यावधिविषयतोऽधिक्राः २१ ॥ गतिश
रीरपरिग्रहाजिमान्तो ह्रीनाः २२ ॥
उच्चासाहारवेदनोप पातालु ज्ञावतश्च
साध्याः २३ ॥ पीतपद्मशुक्ललेश्यादि
तिशेषेषु २४ ॥ प्राग्ग्रेवेयकेऽन्यः कष्टपाः
२५ ॥ ब्रह्मलोकाजलयालोकांतिकः २६ ॥
सारस्वतदित्यवन्त्यरुणमर्दतो यनुषि
ताव्याबाधाम्भृतः २७ ॥ विजयदिषु द्वि
धरमाः २८ ॥ औपपातिकमनुष्येऽन्यः
शेषास्तिर्यग्योनयः २९ ॥ रिश्रतिः ३०
॥ जवतेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पटयो
पममध्यर्धम् ३१ ॥ शेषणां पादोने ३२

(१९९)

॥ असुरैर्योः सागरोपममधिकम् ३३
॥ सौधर्मादिषु यथाक्रमम् ३४ ॥ साग-
रोपमे ३५ ॥ अधिके च ॥ ३६ सप्त,
सतत्कुमारे ३७ ॥ विशेषत्रिसप्तदशै-
कादशत्रयोदश पंचदशान्निरधिकानि
च ३८ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेककेन
नव सुग्रेवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थि-
सिद्धे च ३९ ॥ अपरापट्योपममधि-
कं च ४० ॥ सागरोपमे ४१ ॥ अधि-
के च ४२ ॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानं-
तरा ४३ ॥ नारकाणां च द्वीतीयादि-
षु ४४ ॥ दशवर्षसहस्राणि प्रथमा-
याम् ४५ ॥ जवनेषु च ४६ ॥ व्यंत्

(१३०)

राणां च ४७ ॥ परापल्योपमम् ४८
॥ ज्योतिष्काणामधिकम् ४९ ॥ ग्र
हाणामेकम् ५० ॥ नक्षत्राणामर्द्धम्
५१ ॥ तारकाणांचतुर्भागः ५२ ॥ ज
धन्यात्त्रष्टभागः ५३ ॥ चतुर्भागः शे
षाणाम् ५४ ॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

अजीवकाया धर्माधर्माकाशपुन-
 लाः १ ॥ इव्याणि जीवाश्च २ ॥ नि-
 त्यावस्थितान्यरूपीणि ३ ॥ रूपिणः
 पुनलाः ४ ॥ आकाशादेकइव्याणि
 निष्क्रियाणि च ६ ॥ असंख्येयाः प्र-
 देशा धर्माधर्मयोः ७ ॥ जीवस्य च
 ८ ॥ आकाशस्यानन्ताः ९ ॥ संख्येया
 संख्येयाश्च पुनलानाम् १० ॥ नाणोः
 लोकाकाशेऽवगाहः ११ ॥ धर्माधर्म-
 योः कृत्स्ने १३ ॥ एकप्रदेशादिषु ना-
 ज्यः पुनलानाम् १४ ॥ अ- १०
 गादिषु जीवानाम् १५ ॥

(१३९)

हारविसर्गाज्यां प्रदीपवत् १६ ॥ ग-
तिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः
१७ ॥ आकाशस्यावगाहः १८ ॥ शरी-
रावाङ्मनः प्राणापानाः पुञ्जलानाम्
१९ ॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहा-
श्च २० ॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् २१
॥ वर्तनापरिणामः क्रियापरत्वापरत्वे
च कालस्य २२ ॥ स्पर्शरसगंधवर्णवं-
तः पुञ्जलाः २३ ॥ शब्दगंधसौक्ष्म्य-
स्थौल्यसंस्थानजेदतमद्रव्यायातपोद्यो-
तवंतश्च २४ ॥ अणवः स्कंधाश्च २५ ॥
संघातजेदेज्य उत्पाद्यन्ते २६ ॥ जेदा-
णुः २७ ॥ जेदसंघाताज्यां चाक्षुषाः

(१३३)

२७ ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं तन् २८
॥ तन्नावाव्ययं नित्यम् ३० ॥ अर्पिता
नर्पितसिद्धेः ३१ ॥ स्निग्धरुक्तात्वाह्वयः
३२ ॥ न जघन्यगुणानाम् ३३ ॥ गुण
साम्ये सदृशानाम् ३४ ॥ व्यधिकादि
गुणानां तु ३५ ॥ वंदे समाधिकौ पा
रिणामिकौ ३६ ॥ गुणपर्यायवद्द्रव्य
म् ३७ ॥ कालश्चेत्येके ३८ ॥ सोऽनंतन
मयः ३९ ॥ इत्याश्रया निर्गुणागुणाः
४० ॥ तन्नावः परिणामः ४१ ॥ अना
दिदिमौश्च ४२ ॥ रूपिप्वादिन्नान
४३ ॥ योगोपयोगौ जीवेषु ४४ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

(१३४)

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मनःकर्म योगः १ ॥ स
आश्रवः २ ॥ शुभः पुण्यस्य ३ ॥ अ
शुभः पापस्य ॥ (शेषं पापम्) ४ ॥ स
कषाया कषाययोः सांपरायिकेर्यापथ
योः ५ ॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पं
चचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य
जेदाः ६ ॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातज्ञावची
र्याधिकरणविशेषज्यस्तद्विशेषेः (वि
शेषान्तद्विशेषः) ७ ॥ अधिकरणं जी
वाजीवाः ८ ॥ आद्यं संरंजसमारंजा
रंजयोगकृतकारितानुमतिकषायविशे
षैस्त्रिस्त्रिस्त्रिभुवैकशः ९ ॥ निर्वर्तना

(१३५)

निद्रोपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्ध्विजे
दाःपरं १०॥ तत्प्रदोपनिन्द्वमात्सर्या
तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर
णयोः ११॥ दुःखशोकतापाक्रन्दनवध
परिवेदनान्यात्म परोक्षयस्यान्य सद्दे
यस्य १२॥ जूनव्रत्यनुकंपादानसराग
संदम्यादियोगक्षांतिशौचमिति तद्वेद्य
स्य १३ ॥ केवलेश्रितसंघर्षर्मदेवावर्ण
वादो दर्शनमोहस्य १४ ॥ कपायोद
यात्तीव्रात्म परिणामश्चारित्र मोहस्य
१५ ॥ वह्यारंजपरिग्रहत्वं च न क
स्यायुषः १६॥ माया तैर्यग्यो
॥ अह्वारंजपरिग्रहत्वं

(१३४)

॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

कायवाङ्मनःकर्म योगः १ ॥ स

आश्रवः २ ॥ शुभः पुण्यस्य ३ ॥ अ

शुभःपापस्य ॥ (शेषपापम्) ४ ॥ स

कषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथ

योः ५ ॥ इन्द्रियकषायाव्रतक्रियाः पं

चचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य

ज्ञेदाः ६ ॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातज्ञाववी

र्याधिकरणविशेषन्यस्तद्विशेषेः (वि

शेषात्तद्विशेषः) ७ ॥ अधिकरणं जी

वाजीवाः ८ ॥ आद्यं संरंजसमारंजा

रंजयोगकृतकारितानुमतिकषायविशे

षेस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ए॥ निर्वर्त्तना

(१३५)

निकेपसंयोगनिसर्गादद्विचतुर्द्वित्रि जे
दाःपरं १०॥ तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यो
तरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावर
णयोः ११॥ दुःखशोकतापाक्रंदनवध
परिवेदनान्यात्म परोक्षयस्थान्य सद्दे
यस्य १२॥ जूतव्रत्यनुकंपादानसराग
संयमादियोगह्मांतिशौचमिति सद्देय
स्य १३॥ केवलिश्रुतसंघधर्मदेवावर्ण
वादो दर्शनमोहस्य १४॥ कषायोद
यात्तीव्रात्म परिणामश्चारित्र मोहस्य
१५॥ बह्वारंजपरिग्रहत्वं च नारक
स्थायुषः १६॥ माया तैर्यग्योनस्य १
॥ अल्पारंजपरिग्रहत्वं

(१३६)

वार्जवत्वं च मानुषस्य १८ ॥ निःशी-
लव्रतत्वं च सर्वेषां १९ ॥ सरागसंय-
मसंयमासंयमाकामनिर्जरा बालतपां-
सि देवस्य २० ॥ योगवक्रताविसंवादनं
चाशुजस्य नाम्नः २१ ॥ विपरीतं शु-
जस्य २२ ॥ दर्शनविशुद्धिर्विनयसंपन्न-
ताशीलव्रतेष्वनतिचारोऽजीकृणौ ज्ञा-
नोपयोगसंवेगौ शक्तितस्त्यागतपत्नी
संघसाधुसमाधिवैयावृत्यकरणमर्हदा-
चार्यबहुश्रुतप्रवचनज्ञक्तिरावश्यकाप-
रिहाणिर्मार्गप्रज्ञावना प्रवचनवत्सल-
त्वमितित्तीर्थकृत्वस्य २३ ॥ परात्मनि-
दाप्रशंसेसदसद्गुणाब्जादनोद्भावने च

(१३८)

प्रमत्तयोगोत्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ८
असदन्निवानमनृतम् ९ ॥ अदत्तादा
नं स्तेयम् १० ॥ मैथुनमब्रह्म ११ ॥ मू
र्छापरिग्रहः १२ ॥ निःशब्दो व्रती १३
॥ अगार्यनगारश्च १४ ॥ अणुव्रतोऽगा
री १५ ॥ दिग्देशानर्थदंरुविरतिसा-
मायिकपौषधोपवासोपज्ञोगपरिज्ञोग
परिमाणातिथितंविज्ञागव्रतसंपन्नश्च
१६ ॥ मारणांतिकीं संलेखनां ज्योषि
ता १७ ॥ शंकाकांक्षाविचिकित्सान्य
दृष्टिप्रशंसासंस्तवाः सम्यग्दृष्टे रति
चाराः १८ ॥ व्रतशीलेषु पंच पंच य-
थाक्रमम् १९ ॥ बंधवधहविच्छेदाति

(१३९)

ज्जारारोपणान्नपाननिरोधाः २० ॥ मि
थ्योपदेशरहस्याज्याख्यान कूटलेख
क्रियान्यासापहार साकारमंत्र ज्ञेदाः
२१ ॥ स्तेनप्रयोगतदात्ततादानविरु-
द्धराज्यातिक्रमहीना धिकमानोन्मा
नप्रतिरूपकव्यवहाराः २२ ॥ परवि-
वाहकरणेत्वर परिगृहीता गमनानंग
क्रीमातीव्रकामाज्जिनिवेशाः २३ ॥ के
त्रवास्तुहिरण्यसुवर्ण धनधान्यदासी
दासकुप्यप्रमाणातिक्रमाः २४ ॥ उर्ध्वा
धस्तिर्यग्व्यतिक्रमः क्षेत्रवृद्धिस्मृत्यं
तर्धानानि २५ ॥ आनयनप्रेष्यप्रयोग
शब्दरूपानुपातपुञ्जप्रक्षेपाः २६ ॥ कं

(१४०)

दंपकौकुच्यमौखर्यासमीक्षयाधिकर-
णोपन्नोगाधिकत्वानि २७ ॥ योगदुः
प्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि
२८ ॥ अपत्यवेक्षिताप्रभार्जितोत्सर्गा
दाननिक्षेपसंस्तारोपक्रमणानादरस्मृ-
त्यनुपस्थानानि २९ ॥ सचित्तसंबद्ध
संमिश्रान्निषवदुःपक्काहाराः ३० ॥ स
चित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेश मात्स-
र्यकालातिक्रमाः ३१ ॥ जीवितमरणा
शंसा मित्रानुरागसुखानुबंधनिदानक-
रणानि ३२ ॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिस-
र्गो दानम् ३३ ॥ विधिद्व्यदातृपात्र
विशेषात्तद्विशेषः ३४ ॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषा
ययोगा वंदहेतवः १ ॥ सकषायत्वा
ज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुङ्गवानादत्ते
२ ॥ सर्वधः ३ ॥ प्रकृतिस्त्रित्यनुज्ञाव
प्रदेशास्तद्विषयः ४ ॥ आद्यो ज्ञानद-
र्शनावरणवेदनीय मोहनीयायुष्कना
मगोत्रांतरायाः ५ ॥ पंच नवद्वयष्टाविं
शति चतुर्द्विचत्वारिंशद्वि पंचन्नदा
यथाक्रमम् ६ ॥ मत्यादीनां ७ ॥ चक्षुर
चक्षुरवधिकेवलानां निज्ञानिज्ञानिज्ञा
प्रचलाप्रचला प्र ८ ८ ८ ८
स्वेदनीयानिच ७ ॥ सदसद्वेद्ये ९

(१४९)

नचारित्रमोदनीयवायनोकषायवेदक
नीयाख्यास्त्रिद्विषोमशानवजेदाःसम्य
त्तव मिथ्यात्वतदुज्जयानि कषायनो
कषाया वनंतानुबंध्य प्रत्याख्यान प्र-
त्याख्याना वरण संज्वलन विकल्पा
श्वैकशः क्रोध मान माया लोभाः हा
स्य रत्परति शोक ज्ञय जुगुप्सास्त्री
पुंनपुंसकवेदाः १० ॥ नारक तैर्यग्यो
नमानुषदैवानि ११ ॥ गतिजातिशरी
रागोपांगनिर्माणबंधनसंघात संस्था-
नसंहनन स्पर्शरसगंधवर्णानुपूर्व्यगु-
रुल घूषघातपराघाता तपोद्योतोद्धा-
सविहायोगतयः प्रत्येकशरीरत्रस सु
जगसुस्वरशुभसूक्ष्मपर्याप्तिस्थिरादेय

यशांसिसेतराणितीर्थकृत्त्वंचेति १२॥
 नचैर्नीचैश्च १३ ॥ दानादीनामंतरायः
 १४ ॥ आदितस्तिसृणां (अंतरायस्य)
 च त्रिंशत्सागरोपमकोटीकोटयः प-
 रा स्थितिः १५ ॥ सप्ततिर्मोहनीयस्य
 १६ ॥ नामगोत्रयाविंशतिः १७ ॥ त्र-
 यस्त्रिंशत् सागरोपमाण्या युष्कस्य
 (त्रयस्त्रिंशत्सागराण्यधिकान्यायुष्क-
 स्य) १८ ॥ अपराद्वादशमुहूर्त्तविद-
 नीयस्य १९ ॥ नामगोत्रयोरष्टौ २० ॥
 शेषाणामंतर्मुहूर्त्तम् २१ ॥ त्रिपाकोऽनु-
 ज्ञावः २२ ॥ स यथा नाम २३ ॥ तत-
 श्च निर्जरा २४ ॥ नामप्रत्ययाः सर्वतो

(१४४)

योगविशेषात्सूक्ष्मैक क्षेत्रावगाढस्थि
ताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंत प्रदेशाः
२५॥ सद्देयसम्यक्तवद्दास्यरतिपुरुषवे
दंशुल्लायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् २६ ॥

॥ इति अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

आश्रवनिरोधः संवरः १ ॥ सगु
प्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजय चा
रित्रः २ ॥ तपसा निर्जरा च ३ ॥ स
म्यग्योगनिग्रहो गुप्ति ४ ॥ ईर्यान्नापै
षणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ५
॥ उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसं
त्तपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि ६

(१४५)

र्मः ६ ॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्य
शुचित्वाश्रवसंवरनिर्जरालोकबोधिपु-
र्लज्जधर्मस्वतत्त्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ७ ॥
मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः प-
रिषहाः ८ ॥ कुत्पिपासाशीतोष्णदंश
मशकनागन्यारतिस्त्रीचर्या निषद्याश
याक्रोशवधयाचनालाज्जरोगतूण स्प-
र्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञान दर्श-
नानि ९ ॥ सूक्ष्मसंपरायठद्वयस्त्रयीत
रागयोश्चतुर्दश १० ॥ एकादश जिने
११ ॥ बादरसंपराये सर्वे १
वरणे प्रज्ञाज्ञाने १३ ॥
राययोरदर्शनालाज्जौ

(१४६)

हेनाग्न्यारतिस्त्री निषद्याक्रोशयाचना
सत्कारपुरस्काराः १५ ॥ वेदनीये शे
षाः १६ ॥ एकादयो ज्ञाज्या युगपदे
कोनविंशतेः १७ ॥ सामायिकवेदोऽस्या
प्यपरिहारविशुद्धिस्त्वहमसंपराययथा
ख्यातानि चारित्रम् १८ ॥ अनशना
चमोदर्थवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्याग
विविक्तशय्यासनकायक्लेशा दाह्यंतपः
१९ ॥ प्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वा-
धायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् २० ॥ न
वचतुर्दशपंचद्विजेद यथाक्रमं प्रा-
गध्यानात् २१ ॥ आलोचनप्रतिक्रमण
यविवेकव्युत्सर्ग तपश्छेद परि-

(१४७)

हारोपस्थापनानि २२ ॥ ज्ञानदर्शन
चारित्र्योपचाराः २३ ॥ आचार्योपाध्या
यतपस्विशिक्षकग्लानकुलगणसंघसा
धुमनोज्ञानाम् २४ ॥ वाचनापृष्ठनानु
प्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः २५ ॥ बाह्या-
न्यंतरोपध्योः २६ ॥ उत्तमसंहननस्यै
काप्रचित्तानिरोधश्चध्यानम् २७ ॥ आ
मुहूर्त्तात् २८ ॥ आर्त्तरौद्र्यस्म्यशुक्लानि
२९ ॥ परे मोक्षहेतू ३० ॥ आर्त्तमम
नोज्ञानां संप्रयोगे तद्विप्रयोगायस्मृ-
तिसमन्वाहारः ३१ ॥ वेदनायाश्च ३२
॥ विपरीतं मनोज्ञानाम् ३३ ॥ निदा
॥ कामोपहतचित्तानां पुनः ३

(१४८)

दविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ३५
॥ हिंसानृतस्तेय विषयसंरक्षणेभ्यो रौ
डमविरतदेश विरतयोः ३६ ॥ आङ्गा
पायविपाकसंस्थान विचयाय धन्यम
प्रमत्तसंयतस्य ३७ ॥ उपशांतकीर्ण
कषाययोश्च ३८ ॥ शुक्ले चाद्ये ३९ ॥
(शुक्लेचाद्ये पूर्वविदः ए. ३९ ॥) पू
र्वविदः ४० ॥ परे केवलिनः ४१ ॥ पृथ
क्त्ववितर्कैकत्वसूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति
व्युपरतक्रियानिवृत्तीनि ४२ ॥ तत्रये
ककाययोगायोगानाम् ४३ ॥ एकाश्च
गेसवितर्के पूर्वे ४४ ॥ अविचारं द्वि-
यम् ४५ ॥ वितर्कःश्रुतम् ४६ ॥ वि

(१४ए)

घासोऽर्थव्यंजनयोर्योगसंक्रांतिः ४७॥
 सम्यग्दृष्टिश्रावकविरतानंतवियोजक
 दर्शनमोहक्षपकोपशमकोपशांतमोह
 क्षपकक्षीण मोहजिनाः क्रमशोऽसं
 ख्येयगुणनिर्जराः ४८॥ पुलाकबकुश
 कुशीलनिर्ग्रंथस्नातका निर्ग्रंथाः ४९
 संयमश्रुतप्रतिसेवनातीर्थलिंग लेश्या
 पपातस्थानविकल्पतः साध्याः ५०॥

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥

॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

मोहक्षयाज्ज्ञानदर्शना वरणांत
 रायक्षयाच्च केवलम् १॥ बंधहेत्वज्ञाव
 निर्जराभ्याम् २॥ कृत्स्नकर्मक्षयो

(१५०)

कः ३ ॥ औपशमिकादि ज्ञव्यत्वान्ना
वाच्चान्यत्रकेवलसम्यक्तवज्ञान दर्शन
सिद्धत्वेऽन्यः ४ ॥ तदनंतरमूर्ध्वं गच्छ
त्यालोकांतात् ५ ॥ पूर्वप्रयोगादसंग
त्वाब्दंधृष्टेदात्तथागतिपरिणामाच्च त
ज्जतिः ६ ॥ क्षेत्रकालगतिलिंगतीर्थचा
रित्रप्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनां
तरसंख्यालपवहुत्वतः साध्याः ७ ॥

॥ इति दशमोऽध्यायः ॥
